Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_

"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन" का शिक्षकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर
"मास्टर ऑफ एजुकेशन"
उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत
लघुशोध प्रबंध

मार्गदर्शिका
श्रीमती अनुप्रिया शर्मा
सहायक प्राध्यापिका
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोधार्थी
अवधेश पटेल
एम.एड. प्रशिक्षार्थी
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

प्रगति महाविद्यालय
चौबे कालोनी, रायपुर (छ.ग.)
सत्र 2011–12

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन" का शिक्षकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन"

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर

"मास्टर ऑफ एजुकेशन"

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध प्रबंध

मार्गदर्शिका
श्रीमती अनुप्रिया शर्मा
सहायक प्राध्यापिका
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोधार्थी
अवधेश पटेल
एम.एड. प्रशिक्षार्थी
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

प्राचार्य
डॉ. श्रुति झा
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

डॉ. सौम्या नैय्यर
विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

प्रगति महाविद्यालय

चौबे कालोनी, रायपुर (छ.ग.)

सत्र 2011–12

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **अवधेश पटेल** द्वारा प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध **"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन" का शिक्षकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** एम.एड. की उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में पूरा किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन इनकी स्वयं की मौलिक प्रस्तुति है।

निर्देशिका

श्रीमति अनुप्रिया शर्मा
एम.ए. (अंग्रेजी), एम.एड.
प्रगति महाविद्यालय, रायपुर
(छ.ग.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Uni - c

घोषणा पत्र

मैं अवधेश पटेल यह घोषणा करता हूं कि **"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन" का शिक्षकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** विषय पर यह लघुशोध प्रबंध मेरा मौलिक प्रयास है। जिसे मैनें श्रीमति अनुप्रिया शर्मा अध्यापिका, प्रगति महाविद्यालय रायपुर के निर्देशन से पूरा किया। यह कार्य विषय सूची के अनुरूप है।

स्थान– रायपुर
दिनांक –

अवधेश पटेल
एम.एड. प्रशिक्षार्थी
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

प्राक्कथन

प्रगति महाविद्यालय रायपुर छ.ग. के माध्यम से शिक्षा की स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा वर्ष 2011–12 के लिए **"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन" का शिक्षकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

इस धरती पर सबसे महत्वपूर्ण कार्य अध्यापक का है क्योंकि यह स्वयं सबसे विकसित इकाई मानव है, एवं मानव के साथ मानव चेतना एवं मानवीयता की जागृति के लिये कार्य करता है। प्रकृति में चार अवस्थाएं है पदार्थ अवस्था (मिट्टी, पत्थर, मणि, धातु), प्राण अवस्था (पेड़ –पौधे), जीव अवस्था (पशु–पक्षी), एवं ज्ञान अवस्था की इकाई माानव है। एक इंजीनियर पदार्थावस्था– मिट्टी, पत्थर, लोहा आदि के साथ काम करता है, एक डॉक्टर–प्राण अवस्था की इकाई पशु शरीर या मानव शरीर के लिए कार्य करता है। वैज्ञानिक पदार्थावस्था या प्राण अवस्था के साथ कार्य या शोध करता है परन्तु एकमात्र अध्यापक ही है जो संपूर्ण मानव के साथ मानवीयता एवं समझ देने के लिए कार्य करता है।

इन चारों अवस्थाओं को देखें तो मानव को छोड़कर शेष तीनो अवस्थाओं का आचरण निश्चित है। पदार्थ, प्राण और जीव अवस्था आपस में एक दूसरे के पूरक है, सहायक है। यह तीनों मानव के लिए भी पूरक है परन्तु मानव को देखें तो मानव में आचरण निश्चित नहीं है। मानव निश्चित आचरण को पहचान सके, सीख सके, ऐसे आचरण के साथ जी सके इसलिये शिक्षा संस्कार में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। जैसा शिक्षा संस्कार देते है वैसा उसका आचरण को होता है। यही समझ भी है और समाधान भी है। मानव शिक्षा संस्कार अनुषंगी है अर्थात शिक्षा–संस्कार के द्वारा आचरण निश्चित होता है। बाकी अवस्थाओं में पदार्थ अवस्था में परिणाम अनुषंगी अर्थात मात्रा या बनावट के अनुसार आचरण निश्चित व नियंत्रित है। तथा प्राण अवस्था में बीजानुषंगी अर्थात बीज के अनुसार आचरण होता

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

है तथा जीव अवस्था में वंश के अनुसार आचरण निश्चित होता है। गाय के वंश के अनुसार गाय का आचरण निश्चित होता है। ज्ञान के अवस्था में शिक्षा संस्कारानुषंगी होता है यदि बच्चे को संघर्ष की शिक्षा देंगें तो वह संघर्ष व लड़ाई–झगड़ा ही करेगा। वह संबंध पूर्वक जी नहीं सकेगा। इसलिए निश्चित आचरण की शिक्षा के लिये मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। अभिभावक, शिक्षक व समाज तीनों से बच्चा प्रभावित व प्रेरित होता है। इसलिए तीनों की जिम्मेदारी है परंतु अध्यापक को सबसे अधिक जिम्मेदार होना आवश्यक है क्योंकि बच्चा सबसे पूरी आस्था एवं विश्वास के साथ शिक्षक का सम्मान करता है व आज्ञापालन करता है।

इसी से संबंधित है लघुशोध। चूंकि अध्यापक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, इसलिए अध्यापक को चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन आवश्यक है। प्रस्तुत लघुशोध का विषय है **"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन" का शिक्षकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** सर्वप्रथम मैं प्रगति महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. श्रुति झा के प्रति कृतज्ञ हूं, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मुझे मिला।

शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ. सौम्या नैय्यर के प्रति मैं हृदय से आभारी हूं, जिन्होनें समय–समय पर प्रत्यक्ष सहयोग दिया एवं विषय चयन में सहायता की।

मैं अपने शोध निर्देशिका श्रीमति अनुप्रिया शर्मा के प्रति ह्दय से आभारी हूं, जिनके कुशल एवं मूल्यवान निर्देश द्वारा मेरा लघुशोध कार्य संपन्न हो सका।

मैं प्राध्यापक श्री जे.पी.श्रीवास्तव जी एवं प्राध्यापिका सुश्री प्रीति श्रीवास्तव के प्रति हृदय से आभारी हूं, जिनके कुशल एवं मूल्यवान निर्देश द्वारा मेरा लघुशोध कार्य संपन्न हो सका। मुझे इनसे पूर्ण सहयोग मिला।

महाविद्यालय शिक्षा संकाय के समस्त प्राध्यापकगणों के प्रति मैं हृदय से आभारी हूं जिन्होनें शोध से संबंधित कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया।

उपरोक्त लघुशोध को पूर्ण करने हेतु आंकड़ों की उपलब्धता एवं चेतना विकास मूल्य शिक्षा से संबंधित विशेष मार्गदर्शन हेतु माननीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय परिवार) अछोटी एवं अभिभावक विद्यालय परिवार, सत्यम बाल संस्थान रायपुर को धन्यवाद देता हूं जिनके सहयोग से इसे लघुशोध का रूप दिया जा सका।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD- Raipur Univ_c

मैं अपने माता–पिता एवं अपने प्रियजनों का अत्यंत आभारी हूं जिनका आशीर्वाद एवं सहयोग साथ – साथ रहा । इसके अलावा प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले सभी संबंधियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं जिनके सहयोग एवं प्रेरणा से इस कार्य को पूर्णता प्रदान कर पाया।

स्थान– रायपुर
दिनांक –

शोधकर्ता

अवधेश पटेल
एम.एड. प्रशिक्षार्थी
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कृतज्ञता

मैं सर्वाधिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं **मध्यस्थ दर्शन "सहअस्तित्वाद" व चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रणेता श्री ए.नागराज जी** (अमरकंटक) का, जिन्होनें अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था एवं मानवीय परंपरा के लिए, सर्व मानव के शुभ के लिए, अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के रूप में विकल्प के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अनुसंधान किया। जिसका वांगमय "मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद" शास्त्र के रूप में प्रस्तुत हुआ। इनके प्रेरणा से ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा पृथक पाठ्यक्रम के रूप में आज आई.आई.आई.टी. हैदराबाद, आई.आई.टी. कानपुर, आई.आई.टी. दिल्ली, यू.पी. टेक्नीकल यूनिवर्सिटी के 630 महाविद्यालयों में पंजाब टेक्नीकल यूनिवर्सिटी एवं छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा रहा है। इनके आशीर्वाद, सद्प्रेरणा व प्रस्तुत शास्त्रों के अध्ययन से ही यह लघु शोध पूर्ण हो सका।

शोधकर्ता

स्थान– रायपुर

दिनांक –

अवधेश पटेल
एम.एड. प्रशिक्षार्थी
प्रगति महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

अनुक्रमणिका

क. सं.		पृष्ठ क.
अध्याय –1	**अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि**	**1–31**
1.1	प्रस्तावना	2–4
1.2	अध्यापक शिक्षा में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता	5
1.2.1	शिक्षा आयोग एवं समितियों का रिपोर्ट, अनुशंसा एवं सिफारिश	6–8
1.2.2	वर्तमान पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का अभाव	9–15
1.2.3	मूल्य शिक्षा का प्रस्तावित रूप	15–19
1.3	चेतना विकास मूल्य शिक्षा	20–21
1.4	चेतना विकास मूल्य शिक्षा – परिभाषा	21–22
1.5	चेतना विकास मूल्य शिक्षा का उद्‌भव	23
1.6	मूल्यों का वर्गीकरण	24
1.7	मूल्यों का महत्व	25–28
1.8	अध्ययन का समीक्षात्मक आधार	28–29
1.9	अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व	29–31
अध्याय–2	**संबंधित शोध अध्ययन,समस्या,क्षेत्र,उद्‌देश्य तथा परिकल्पना**	**32–51**
2.1	भूमिका	33–34
2.2	संबंधित शोध अध्ययन	34–41
2.3	समस्या क्या है ?	42
2.4	समस्या कथन	42
2.5	प्रयुक्त चर	43
2.6	कियात्मक शब्दों की परिभाषाएं	43–44
2.7	समस्या का स्पष्टीकरण	45–46

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

2.8 प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 46–47

2.9 अध्ययन की परिकल्पना 48–50

2.10 अध्ययन की क्षेत्र एवं परिसीमन 51

अध्याय – 3 अध्ययन की प्रक्रिया एवं शोध अभिकल्पना 52–63

3.1 भूमिका 53–54

3.2 अध्ययन विधि एवं चयन का आधार 54–55

3.2.1 सर्वेक्षण विधि 55–56

3.2.2 न्यादर्श विधि का चयन प्रकिया 57–59

3.2.3 प्रदत्त संकलन हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण 59–60

3.2.4 उपकरण की व्याख्या एवं मापनी 60

3.3 तकनीकी अभिप्रयोग 61

3.4 परीक्षण प्रशासन विधि 61

3.5 प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण 62–63

अध्याय –4 प्रदत्तों का व्यवस्थापन, विश्लेशण एवं व्याख्या 64–76

4.1 भूमिका 65

4.2 प्रदत्तों का सारणीयन 66

4.3 प्रदत्तों का व्यवस्थापन, व्याख्या एवं विवेचना 66–76

4.4 परिकल्पनाओं की जांच हेतु सारणी एवं ग्राफ

सारणी 4.1 एवं ग्राफ 67

सारणी 4.2 एवं ग्राफ 69

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c
सारणी 4.3 एवं ग्राफ 71

सारणी 4.4 एवं ग्राफ 73

सारणी 4.5 एवं ग्राफ 75

अध्याय –5 सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव 77–83

5.1 भूमिका 78

5.2 सारांश 78–85

5.3 निष्कर्ष 83–88

5.4 सुझाव 88–89

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव 89

संदर्भ ग्रंथ सूची 90

शब्दावली 91–92

परिशिष्ट 93
www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय –1 अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना

1.2 अध्यापक शिक्षा में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

1.2.1 शिक्षा आयोग एवं समितियों का रिपोर्ट, अनुशंसा एवं सिफारिश

1.2.2 वर्तमान पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का अभाव

1.2.3 मूल्य शिक्षा का प्रस्तावित रूप

1.3 चेतना विकास मूल्य शिक्षा

1.4 चेतना विकास मूल्य शिक्षा – परिभाषा

1.5 चेतना विकास मूल्य शिक्षा का उद्‌भव

1.6 मूल्यों का वर्गीकरण

1.7 मूल्यों का महत्व

1.8 अध्ययन का समीक्षात्मक आधार

1.9 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

1.10 संबंधित शोध अध्ययन

अध्याय – 1
अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना

विज्ञान शिक्षा से छात्र–छात्राओं एवं युवाओं में तर्कशक्ति का विकास हुआ है। जिससे आस्था (बिना जाने मान लेना) की प्रवृत्ति में कमी आयी है। अतः परम्परागत शैली जिसमें "यह करो न करो" अथवा ऐसा जीना चाहिएं आदि उपदेश विद्यार्थियों में अब प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं ऐसे में परिवारोन्मुखी, एवं समाजोन्मुखी शिक्षा के सार्वभौम स्वरूप पर चिंतन की नितान्त आवश्यकता महसूस हो रही है।

युनेस्को (UNESCO) द्वारा अपेक्षित शिक्षा के चार स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ Learning to Live Together अर्थात साथ – साथ जीना सीखना पर जोर दिया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार ने मानव मूल्य शिक्षा हेतु निम्न मार्गदर्शन दिया है।

1. पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार की अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, व पूजन पद्धति से मुक्त हो।
2. पाठ्यक्रम रहस्यवाद, सम्प्रदायवाद व व्यक्तिवाद से मुक्त हो।
3. पाठ्यक्रम "करो न करो" आदि उपदेश न होकर तर्कपूर्ण, ढंग से इसका प्रयोग एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हो।
4. पाठ्यक्रम को आचरण में प्रमाणित किया जा सकता है।
5. पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हो।

आधुनिक शिक्षा को रोजगारोन्मुखी ही नहीं बल्कि परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी भी होने की आवश्यकता है ताकि हर परिवार समृद्धिपूर्वक जी

www.madhyapradeshstudies.info - Information Portal

सके। समाधान का अर्थ मानव संबंधों में परस्पर तृप्ति एवं प्रकृति के साथ संतुलन पूर्वक जीना है समृद्धि अर्थात अभाव–मुक्त जीना। समृद्धि का अर्थ आवश्यकता से अधिक उपलब्ध होने का भाव है समाधान के आधार पर ही मानव आवश्यकताओं को पहचान पाता है प्रकृति में हर इकाई के होने का एक निश्चित अर्थ है जो सार्वकालिक एवं सार्वभौम है। इसलिए सार्वभौम मानवीय मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जाती रही है।

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) उपरोक्त सभी कसौटियों को पूरा करता है जिसका परिचय जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है मध्यस्थ दर्शन से निःसृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव में सात सदगुणों को सुनिश्चित करती है :–

1. स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भयमुक्ति।
2. श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास।
3. स्वयं की प्रतिभा (समझ) के प्रति विश्वास।
4. स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास।
5. व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास अर्थात भयमुक्त समाज की स्थापना एवं निरंतरता के लिए अपनी भागीदारी के प्रति विश्वास
6. उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास।

आज धरती एक गांव (Globle Village) हो गयी है। अतः विश्व शांति हेतु वैश्विक नागरिक (Globle Citizen) अर्थात सार्वभौम मानवीय आचरण की पहचान की आवश्यकता बन गई है सार्वभौम मानवीय आचरण जो हमेशा स्वयं को स्वीकार्य होता है एवं सभी के लिए शुभ ही होता है यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत होने से उपलब्ध होता है

सार्वभौम मानवीय आचरण पूर्वक जीने से मानव भूतकाल की पीड़ा वर्तमान से विरोध, एवं भविष्य की चिंता से मुक्त होता है ऐसा मानव योजना बद्ध तरीके से निश्चित कार्यक्रम के साथ स्वंय के प्रति विश्वास पूर्वक जीता हुआ परिवार में समृद्धि एवं समाज में व्यवस्था (भयमुक्त समाज) को प्रमाणित करता है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रकाश में सार्वभौम मानवीय आचरण, सार्वभौम मानवीय शिक्षा, सार्वभौम मानवीय व्यवस्था, सार्वभौम मानवीय संविधान का व्यावहारिक स्वरूप व्याख्यापित होता है साथ ही मानव (स्त्री–पुरूष) में समानता एवं अमीरी गरीबी में संतुलन पूर्वक जीने की राह प्रशस्त होती है।

अतः ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जिससे परिवार से लेकर विश्व तक हीं भी मानव विश्वासपूर्वक जी सके। ऐसी ही शिक्षा को मानवीय अथवा चेतना विकास मूल्य शिक्षा कहा गया है। यह मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) से निःसृत है। इसके प्रणेता श्री ए. नागराज जी (अमरकंटक) है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद की परिचयात्कम प्रस्तुति जीवन विद्या शिविर है।

न्यूनतम एक सात दिवसीय शिविर के बाद ही मानव चेतना के उस धरातल से परिचित हो पाता है जिस पर खड़े होकर ये बाते हो रही है मध्यस्थ दर्शन में प्रयुक्त अधिकांश शब्दों के अर्थ परम्परा से भिन्न है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1.2 आध्यापक शिक्षा में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

"जानकारी इकट्ठा करना और तथ्यों को बटोरकर आपस में मिलाना ही शिक्षा नहीं है, शिक्षा तो जीवन के अभिप्राय को उसकी समग्रता में देखना समझना है।....... पूर्णतः समन्वित प्रज्ञाशील मनुष्य तैयार करना है। परीक्षा और उपाधि प्रज्ञा का मानदंड नहीं है।"

उक्त संदर्भ में आज की शिक्षा हमें बौद्धिक और सूचना–संपन्न भले ही बना रही हो परन्तु यह भी सच है कि हमारी संज्ञानशीलता एवं संवेदनशीलता का ह्रास हुआ है। शिक्षा देने का काम शिक्षक का है और एक सच्चे शिक्षक के लिए अध्यापन तकनीक नहीं, वह उसकी जीवनपद्धति है। क्योंकि हर व्यक्ति के लिए आचरण ही प्रमाण है।

हमारे देश में शिक्षा के उपर्युक्त उद्देश्यों के अनुरूप सरकार के द्वारा National Policy on Education (1992) के तहत् कहा गया है कि –

> "........ value education is an integral part of school curriculum. It highlighted the values drawn from national goals, universal perception, ethical considerations and character building. It stessed the role of education in combating obscurantism, religious fanaticism, exploitation and injustice as well as the inculcation of value."

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) की संस्था यूनेस्को (UNESCO) के द्वारा भी शिक्षा के मूल्योन्मुखी होने कहा गया है। इसमे शिक्षा के कार्यक्रमों में शान्ति (Peace), मानवाधिकार (Human Rights) तथा मानववादी दृष्टिकोणों (Humanistic Outlook) को समर्थित किया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1.2.1 शिक्षा आयोग एवं समितियों का रिपोर्ट, अनुशंसा एवं सिफारिश

1929 में हटांग समिति ने इस बात की आवश्यकता अनुभव की कि भारतीय विद्यालयों में धार्मिक निर्देशों की शिक्षा दी जानी चाहिए। **1937 में महात्मा गांधी** ने वर्धा में प्रथम भारतीय शिक्षा सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन ने शिक्षा में मानवीय मूल्यों की शिक्षा को स्वीकार किया। **डॉ. जाकिर हुसैन समिति** ने भी इस बात की आवश्यकता अनुभव की किं शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाये, जो छात्रों में आदर्श नागरिकता, शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान तथा सामुदायिक कार्यों में सहभागिता आदि गुणों को विकसित कर सके।

जनवरी 1944 में केन्द्रीय शिक्षा–सलाहकार बोर्ड (Central Advisory Board of Education) ने लाहौर के बिशप बानें (G.D.Barne) की अध्यक्षता में 'धार्मिक शिक्षा समिति' (Religious Education Committee) की नियुक्ति की और इससे शिक्षा–संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा दिये जाने के संबंध में सुझाव मांगे। इस 'समिति' ने अपनी 1946 की रिपोर्ट में धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विषय–सामग्री के संबंध में निम्नलिखित सुझाव दिये –

(1) शिक्षा की प्रत्येक योजना में जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को स्थान दिया जाय।

(2) सब धर्मों के सामान्य, नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाय।

(3) सब धर्मों की सम्मति से उसके सामान्य, नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाय।

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

विभिन्न आयोगों के अनुसार (According to Various Commission) – **1948 में डॉ. राधाकृष्णनन** की अध्यक्षता में नियुक्त किये जाने वाले **'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग'** ने धार्मिक और नैतिक मूल्य शिक्षा की विषय वस्तु के बारे में अधोलिखित सुझाव दिये –

– जीवन मूल्यों की शिक्षा को अनिवार्य करना।

– छात्रों की सुपर एनर्जी को चेनेलाईज करना ।

– सामाजिक कार्य का पाठ्यक्रम हो।

भारतीय संविधान में भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया, जिसके अनुसार भारत का कोई धर्म नहीं होगा और धर्म के आधार पर उनमें कोई भेद–भाव नहीं किया जायेगा तथा राज्य उनकी धार्मिक स्वतंत्रता में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगें।

भारत सरकार ने अगस्त **1959 में श्रीप्रकाश की अध्यक्षता में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा समिति** (Committee on Religious and Moral Instruction) की नियुक्ति की । इस समिति ने जनवरी 1960 में अपनी रिपोर्ट सरकार के समक्ष प्रस्तुत की और उसमें धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की विषय–सामग्री के संबंध में विचार व्यक्त किये– प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के लिए समिति ने मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का सुझाव दिया।

1964 में प्रोफेसर डी.एस. कोठारी की अध्यक्षता में नियुक्त किये जाने वाले **'शिक्षा आयोग'** ने धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विषय– सामग्री के संबंध में विद्यालय स्तर के लिए अधोलिखित सुझाव दिये –

(1) छात्रों को आधारभूत नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा दी जाय, यथा – सत्यता, ईमानदारी, सामाजिक,

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उत्तरदायित्व, पशुओं पर दया, वयोवृद्ध लोगों के प्रति सम्मान एवं दुखी और दरिद्रों के प्रति सहानुभूति इत्यादि।

(2) उक्त सभी मूल्यों को विद्यालय के कार्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाय।

वर्ष 1970 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T.) ने एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मूल्यों की आवश्यकता अनुभव की गयी। इस गोष्ठी निम्नलिखित मूल्यों के विकास पर बल दिया गया –

(1) श्रम का महत्व (2) सामाजिक जागरूकता तथा उत्तरदायित्व की भावना का कास, (3) दूसरे धर्मों के प्रति आदर भावना, (4) निर्भयता, (5) सत्यवादिता, (6) पवित्रता, (7) सेवा तथा (8) अहिंसा।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद में एक छोटी सी पुस्तिका 'Social Moral & Spiritual Values' प्रकाशित की। इसमें शासकीय स्तर पर **'वेल्यू'** शब्द का प्रयोग किया गया। इसमें तिरासी मूल्यों की एक सूची भी दी गई है।

वर्ष 1982 में शिमला में नैतिक शिक्षा पर उच्च स्तरीय परिचर्चा हुई। इसमें मूल्यपरक शिक्षा के बारे में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत की गई।

1. मूल्यपरक शिक्षा का प्रावधान पूरे देश में लागू किया जाना चाहिए।
2. मूल्यपरक शिक्षा हमारी शिक्षण प्रकिया का केन्द्र बिन्दु होनी चाहिए।
3. मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व सभी शिक्षकों पर डाला जाना चाहिए।

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_

1.2.2 वर्तमान पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का अभाव

किसी भी कार्य को करने के लिये उसका ज्ञान (Knowledge) आवश्यक है, ज्ञान के पश्चात् उसके किये जाने के तरीके (Methodology) का बोध होना भी अनिवार्य है। इसके पश्चात् उस कृत्य के सुपरिणाम तथा दुष्परिणाम (Result- Positive or negative) की समझ व्यक्ति को उस कृत्य की ओर प्रेरित करने या न करने में अहम भूमिका निभाती है। अन्तोगत्वा उस कर्म या कृत्य के दूरगामी तथा प्रभावों (Consequence/future effects) को मिलाकर देखने पर उस कृत्य कर्म का समग्र परिदृश्यात्मक बोध निर्मित होता है। इन्हीं उपरोक्त निर्णयों एवं उद्देश्यों का ज्ञान तथा विधिवत् बोध कराने की जो प्रणाली या विधि है उसे ही सरल अर्थों में **"शिक्षा"** से अभिहित किया जाता है।

वर्तमान शिक्षा का परिदृश्य (Education Modern Scenario)–

वर्तमान में शिक्षा का स्वरूप अत्याधुनिक है। विधिक विषयों के विशिष्ट अध्ययन की परिपाटी प्रचलन में है। ये विविध विषय प्रायः विज्ञान, चिकित्सा, तकनीकी आदि के होते हैं। इसके अतिरिक्त कला, कम्प्यूटरविज्ञान, व्यवसाय तथा प्रबंधन परक विषयों का अध्ययन महाविद्यालयों के माध्यम से होता है। यद्यपि ये विषय समाज एवं राष्ट्र के लिये अत्यावश्यक है तथा समाज एवं राष्ट्र के विकास में इनकी भूमिका अहम है। किन्तु इतने विधिक विषय तथा नैपुण्यता परक ज्ञान के पश्चात् भी जिस चीज की कमी व्यक्ति तथा समाज में चिन्तकों के द्वारा अनुभूत की जा रही है वह है –

मानवीय मूल्य (Humanistic Values)

- सद्भाव, प्रेम, सौहार्द्र, अहिंसा, निः स्वार्थपरकता आदि में कमी,

www.madhyasthdarshan.info - Information Portal

राष्ट्रीय मूल्य (National Value)

- देशभक्ति की भावना, राष्ट्रीय एकता की भावना, राष्ट्रीय आवदानों में गरिमान्विता का भाव, त्याग आदि के प्रति दृढ़ता में कमी, तथा

अर्न्राष्ट्रीय मूल्यों (International Value)

- मानवाधिकार, शान्ति, इको सिस्टम आदि के प्रति कमी महसूस की जा रही है।

इन मूल्यों के प्रति उदासीनता के फलस्वरूप सामाजिक विघटन, स्वार्थपरकता, हिंसा, घृणा, राष्ट्र के प्रति असम्मान या उदासीनता का भाव जनित होता है। सांस्कृतिक मूल्यों में अनास्था के परिणाम स्वरूप संस्कृति का क्षय, जनरेशन गेप, ओल्ड एज पीपुल्स प्रोब्लम्स, परिवार का विद्यटन, विवाह संबंधों का टूटना, मानव को मशीन समझना जिससे उपभोक्तावाद आदि की विषाद जनक स्थित उत्पन्न होती है। इन्हीं के अत्यधिक बिगड़ने से सामाजिक क्लेश, व्यापक अशान्ति, जीवन में असंतुष्टि, असुरक्षा, अपराध, तथा आतंकवाद, जैसी विभीषिकाएं जन्म लेती है। इन विभीषिकायों के कारण सामाजिक, राष्ट्रीय असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न होती है।

आज स्वतंत्रता के साठ वर्ष बाद यह स्पष्ट है कि मैकाले की शिक्षा नीति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्णतया सफल हो चुकी है।

वर्तमान शिक्षा में गुरू या अध्यापक श्रद्धा का पात्र न होकर वेतन भोगी नौकर बन गया। अध्यापक की भूमिका गौण हो गई तथा विद्यालय, विश्वविद्यालय के प्रबंध तन्त्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षा में मानव को योग्य एवं चरित्रवान बनाने का वास्तविक लक्ष्य छूट गया तथा डिग्री–सर्टिफिकेट का महत्व बढ़ गया। पेशेगत योग्यता की शिक्षा मंहगी

www.madhyasth-darshan.info - Info

हो गई। इसने एक उद्योग (व्यापार) का रूप ग्रहण कर लिया। सेवा भाव का लोप हुआ तथा व्यापारिक मनोवृत्ति हावी हो गई। कर्म के प्रति श्रद्धा के समाप्त होने से यह मात्र आर्थोपार्जन का साधन बन गया। इससे आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग बन्द हो गया। आहार–विहार में संतुलन न होने से शारीरिक–मानसिक स्वास्थ्य में कमी आई तथा आलस्य–प्रमाद के कारण श्रम शक्ति का ह्रास हुआ। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा से सामाजिक दायित्व एवं राष्ट्रीय कर्तव्य का ज्ञान न मिलने से विद्यार्थी स्वयं एवं परिवार केन्द्रित होकर अधिक से अधिक अर्थोपार्जन में लगे हैं। वे अधिक से अधिक भौतिक सुख–साधनों के संग्रह–उपभोग को ही जीवन का लक्ष्य समझ बैठे हैं। येन–केन–प्रकारेण अर्थोपार्जन के लक्ष्य ने कर्म के अनुष्ठान में नैतिक मानदण्डों को नष्ट किया है। भौतिक सुखों को भोगने की सीमा टूटने से अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक समस्याएं उत्पन्न हुई। कहना न होगा कि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी को शरीर, मन एवं बुद्धि से रूग्ण बनाकर कुसंस्कृत तथा पतनोन्मुख बना रही है। वर्तमान शिक्षा में मूल्य शिक्षा की कमियों को स्वीकार कर विगत दो दशकों से इसमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता की बात को अनेक विद्वानों, विचारकों एवं राजनेताओं ने उठाया है। चूंकि अब तक कोई विचारणीय, अनुकरणीय तथा स्वीकार्य विकल्प प्रस्तुत न हो सका इसलिए वर्तमान शिक्षा को अपनाना लोगों की मजबूरी है।

वर्तमान शिक्षा में अध्यापक विद्यार्थी को योग्य बनाने के दायित्व से रहित है। इसलिये शिक्षा के यान्त्रिक हो जाने से डाक्टर, इंजीनियर जैसे कल–पुर्जो का निर्माण तो हो रहा हे। लेकिन मानव का निर्माण बाधित हो गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ

शिक्षक का केन्द्रीकरण पाठ्यक्रम तक सीमित रह गया है, शिक्षार्थी द्वितीय वरीयता क्रम में आ गया है। अस्तु! शिक्षा का सर्वांगीण विकास अथवा शिक्षार्थी के व्यक्तित्व विकास की अवधारणा उलट गयी है। लक्ष्य परिवर्तित हो गये हैं, व्यक्तित्व के विकास का स्थान अंक–अर्जन ने प्राप्त कर लिया है, लक्ष्य उपाधि अथवा परिणाम हासिल करने तक सिमट गया है। समस्त शिक्षा–तन्त्र का भी एकमात्र उद्देश्य विद्यालय के उत्तम परीक्षाफल तक ही सीमित हो गया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध लगभग समाप्त हो गये हैं। शिक्षा का परम उद्देश्य समझ व शिक्षा संस्कार होता है, वह ओझल हो गया है।

अधूरा विकास

चाहे आई.टी. का क्षेत्र हो अथवा मैनेजमेंट या मेडिकल का , सभी संतोषजनक प्रगति हुई है, परन्तु विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व चरित्र निर्माण की समस्या जस की तस दिखाई दे रही है। पूरे देश में विश्वविद्यालयों का जाल, विदेशी विश्वविद्यालयों की स्थापना, केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा अनेक क्रांतिकारी कदम उठाये जा रहे हैं, जिनमें उच्च शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति, प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्मिलित है। देश की स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा में सुधार हेतु अनेक आयोगों का गठन किया गया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आचार्य राममूर्ति समिति इत्यादि ने शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हेतु अनेक महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत किये किन्तु अमल के रूप में परिणाम शून्य ही रहे।

www.vidyanidhidarshan.info - Information Portal

प्रचलित शिक्षा के कारण वर्तमान प्रचलन में विकास के बारे में मान्यता इस प्रकार है –

- हर व्यक्ति पढ़ा लिखा हो ।
- परिवार अधिक से अधिक सम्पन्न हो।
- समाज में असुरक्षा और भय से निपटने के लिये अधिक से अधिक उपकरण हो।
- प्रकृति पर विजय हो।

हर व्यक्ति पढ़ा – लिखा हो – इस लक्ष्य को बनाते समय यह स्पष्ट नहीं है कि पढ़ाई लिखाई का लक्ष्य क्या हो, वस्तु क्या हो, पढ़ने लिखने का कम क्या हो, शिक्षक छात्र का संबंध कैसा हो? क्या पढ़ना लिखना और शिक्षित होना एक ही बात है या अलग–अलग है ? यदि एक ही है तो अभी पढ़े लिखे व्यक्ति को देखकर ऐसा तो नहीं लगता कि उसकी योग्यता एक सुखी समृद्ध जिंदगी के लिये पूरी पड़ती है, न ही समाज के सुख समृद्धि में सहायक है। और यदि पढ़ना लिखना और शिक्षा अलग–अलग है तो पढ़ाई लिखाई में ऐसा क्या जोड़ा जाए कि व्यक्ति शिक्षित हो सके ? और व्यक्ति के शिक्षित होने का प्रमाण क्या है ?

अर्थशास्त्र में कहा गया है, "**आवश्यकताएं असीम है साधन सीमित है**" इस उक्ति के अनुसार एक व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति तो पूरी प्रकृति भी नहीं कर सकती, फलस्वरूप अभाव में जीना हमारी मजबूरी है। दूसरी ओर यह भी मान्यता है **परिवार अधिक से अधिक साधन संपन्न हों** – यह लक्ष्य तय करते समय यह निश्चित नही है कि परिवार की साधनों की आवश्यकता कितनी है, कौन–कौन से साधन मानव के लिये आवश्यक है, साधनों का उपार्जन किस विधि से हो, साधनों का उपार्जन करते हुए

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव का मानव के साथ और शेष प्रकृति के साथ संबंध का निर्वाह किस प्रकार हो जिससे कि परिवार में शान्ति और खुशहाली बढ़े तथा प्रकृति की समृद्धि बनी रहे।

समाज में अविश्वास तो होगा ही, भय और असुरक्षा तो होगी ही, मानव–मानव तो आपस में विरोधी बने रहेगे। इन सबके बीच मानव अपने को बचाये रखने के लिये अधिक से अधिक इंतजाम कर ले । इसके लिये हथियारों का उत्पादन बढ़ता जा रहा है, देशों के बीच शत्रुता और अधिक खतरनाक होती जा रही है। इतने नाभिकीय बम तैयार हो गये है जिससे धरती एक बार नहीं बल्कि कई बार मिटाई जा सकती है। समाज में अभय हो सकता है इसे एक कल्पना मात्र मान लिया गया है इसलिए प्रयास इस बात के लिये है कि भय बना रहे तथा उससे निपटने का इंतजाम हो।

प्रकृति हमारे लिये पूरक है, हम प्रकृति के लिये पूरक है, ऐसा न सोचकर तकनीकी की दिशा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिये हो गई है। प्रकृति मानव के लिये भोग की वस्तु है, इसलिये मानव संवेदनाओं से सुख पाने के लिये उसका अधिक से अधिक शोषण कर ले, प्रकृति को अपने अधीन कर लें। यदि ऐसा करते हुए प्रकृति में बड़ी अव्यवस्था होती है तो उसकी भरपाई किस प्रकार कर दी जाये। विज्ञान और तकनीकी के अविवेकपूर्ण प्रयोग से पिछले दो सौ वर्षों में धरती को बुखार हो गया है। जल, वायु और जमीन प्रदूषित हो गई है, जंगल कम से कमतर हो गये हैं। अभी कुछ महीने पहले विश्व में इस युग के अग्रणी भौतिकीशास्त्री माने जाने वाले श्री स्टीफन हाकिंग भारत आए थे। उन्होनें धरती पर पांच बड़े खतरों का जिक्र किया जिसमें नाभीकीय युद्ध, आनुवांशिक युद्ध, ग्लोबल वार्मिंग शामिल थे। और समाधान के रूप में एक उपाय उन्होनें यह बताया

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कि 2020 तक धरती को छोड़ दिया जाये। आज जिन्हें हम युग के श्रेष्ठ व्यक्ति मानते है, उनकी ऐसी दशा है।

आज अगर सरकारी योजनाओं की समीक्षा करें तो करीब–करीब सारी योजनाओं, चाहे राष्ट्रीय स्तर पर हो या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, उनका इतना ही लक्ष्य है और इतनी ही उपलब्धि है। अन्य और सरकारी प्रयासों को देखे तो सरकारी प्रयासों से जो वर्ग छूट जा रहे है, या कही विरोध पूर्वक ये प्रयास नहीं पहुंच रहे है, उनके लिये इन्ही लक्ष्यों को पूरा करने का ज्यादातर प्रयास दिखाई देता है।

अतः उपरोक्त कमियों व समस्याओं को देखने व समझने के बाद हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा में मूल्य शिक्षा का अभाव है व शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

1.2.3 मूल्य शिक्षा का प्रस्तावित रूप

शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से हुयी है, जिससे अभिप्राय है, सीखना, अर्जित करना, ग्रहण करना, ज्ञानात्मक रूप से संवृद्ध होना।

अंग्रेजी में शिक्षा के लिये "Education" शब्द है, जो कि 'Educere' (Latin) से बना हुया है, जिससे तात्पर्य होता है – 'to lead', to draw', to acquire'। अर्थात आगे बढ़ना, निकालना, खींचना (ग्रहण), अर्जित करना। तात्पर्य है कि जो बातें व्यक्तित्व तथा चरित्र के निर्माण में सारभूत है उनके अर्जित करना (Acquire), उनकी प्राप्ति की ओर अग्रसर (lead) होना।

मूल्य के लिये अंग्रेजी में "Value" है। "Value" की निष्पत्ति लैटिन "Velere" से हुयी है जिसका तात्पर्य "to be worthy" है। एवं इसका अर्थ है – सार, महत्व। यह सार या महत्व किसी कर्म के परिणाम,

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

प्रभाव या गुण के संदर्भ में मापित किया जाता है। यही उसकी Value या मूल्य होता है।

मूल्याधारित शिक्षा की आवश्यकता तथा अर्थ –

यदि शिक्षा का अर्थ निकालना, ग्रहण करना या अर्जित करना है, तो मूल्याधारित शिक्षा का अर्थ होगा जो मूल्य अर्थात् सार या महत्व है, उसको निकालना या अर्जित करना। इसी संदर्भ में उपनिषद में कहा गया है –

असतो मा सद्गमय	Lead us from untruth to truth,
तमसो मा ज्योतिर्गमय	from darkness to light, and
मृत्योर्मामृतं गमय।	from mortality to immortality.

अर्थात हमें असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृतत्व की ओर ले चलो। विवेकानन्द ने भी शिक्षा की यही परिभाषा दी है कि – "Education is the manifestation of the essence of a man".

शिक्षा में व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रकृति तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी तथा अनिवार्य तत्त्वों को शामिल किये जाने की आवश्यकता रहती है। तब ही वह समग्र तथा पूर्ण शिक्षा हो पाती है। वास्तव में शिक्षा व्यक्तित्व तथा चरित्र निर्माण का सर्वाधिक व सर्वोपरि सशक्त साधन है।

मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा अपेक्षाकृत आधुनिक एवं व्यापक है। परम्परागत रूप में प्रचलित धार्मिक शिक्षा तथा नैतिक शिक्षा आदि से यह भिन्न भी है। यह 'अमुक कार्य करें' (Do's) तथा 'अमुक कार्य मत करो' (Don't) की व्याख्या नहीं है। यह वह आस्था या विश्वास है कि कुछ कार्य निश्चित रूप से निरपेक्षतः अच्छे है और कुछ कार्य पूर्णतः या निरपेक्षतः बुरे हैं। इसमें कार्यों के पीछे निहित

www.madhyaprадesh...n.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_e

सद्गुणों पर बल दिया जाता है। यह 'औचित्य के लिए शिक्षा' (Education for Justification) है।

सामान्यतः मूल्यपरक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है, जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्य समाहित हैं। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्य परक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है, जिससे उनका सन्तुलित एवं सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

मूल्य शिक्षा (Value Education) को निम्नलिखित दो अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है यथा –

(1) मूल्यों की शिक्षा (Education of Values),

(2) मूल्य समाहित या मूल्यपरक शिक्षा (Value-Oriented Education)।

1. **मूल्यों की शिक्षा (Education of Values)** – मूल्यों की शिक्षा के अन्तर्गत हम नैतिक, सामाजिक, सांस्कृति तथा आध्यात्मिक मूल्यों आदि की शिक्षा इतिहास, भूगोल, गणित, रसायनशास्त्र तथा भौतिकशास्त्र आदि विषयों की शिक्षा की भांति एक स्वतंत्र विषय के रूप में देना चाहते हैं।

2. **मूल्यपरक शिक्षा (Value Oriented Education)** – मूल्यपरक शिक्षा में सभी विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से मूल्य समाहित करके निर्धारित मूल्यों के विकास पर बल दिया जाता है। इस शिक्षा में एकीकृत उपागम (Intergrated Approach) पर बल दिया जाता है। आज के संदर्भ में 'Value Education' को दूसरे अर्थ में स्वीकार किया जाना चाहिए।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मूल्यपरक शिक्षा की विषय–वस्तु

मूल्यपरक शिक्षा में समाहित मूल्यों या उसकी विषय–वस्तु को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

1. **शास्त्रीय मूल्य (Academic Values)**
2. **नैतिक मूल्य (Moral Values)**
3. **सामाजिक–राजनैतिक मूल्य (Social-Political Values)**
4. **वैज्ञानिक स्वभाव मूल्य (Scientific Temper Values)**
5. **संवैधानिक मूल्य** (Constitutional Values)
6. **वैश्विक मूल्य (Globle Values)**
7. **पर्यावरणीय मूल्य** (Environmental Values)
8. **सांस्कृतिक मूल्य** (Caltural Values)

उक्त मूल्य तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद द्वारा निर्धारित तिरासी (83) मूल्यों को निम्नांकित छः समूहों में वर्गीकृत किया गया है। उक्त मूल्य तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद द्वारा निर्धारित मूल्यों को मूल्यपरक शिक्षा में विशेष स्थान दिया जाना चाहिए –

1. **साधुता या न्याप्रियता** (Regenteousness) – स्वच्छता, सत्यनिष्ठा, समाज–कल्याण, सहयोग, साहस, अनुशासन, धैर्य, मित्रता, स्वामी–भक्ति, शिष्टाचार, न्याय, आज्ञापालन, समय का सदुपयोग, पवित्रता, ज्ञान–पिपासा, सादा–जीवन, स्व–सहायता (Self-Helf), आवाध्याय, आत्म–निर्भरता, आत्म–विश्वास, आत्म–सम्मान, सहानुभूति, सत्य और असत्य तथा अच्छाई एवं बुराई में भेद करने की भावना, सहिष्णुता तथा सच्चाई आदि।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

2. **स्वानुशासन** (Self-Discipline) – आत्म–नियंत्रण, समयबद्धता, नियमितता, ईमानदारी, भक्ति या निष्ठा, सत्यनिष्ठा, पहलकदमी (Instative), शुभचिन्ता, साधन–सम्पन्त्ता, जिज्ञासा, खोज–प्रवृत्ति तथा भावी दृष्टिकोंण आदि।

3. **मित्र–भाव** (Fellow-Feeling) – सहायता, दूसरों को सम्मान एवं आदर, टीम भावना से कार्य, टीम भावना तथा दूसरों का हित चिन्तन आदि।

4. **मानवतावाद** (Humanism) – व्यक्ति की गरिमा, शारीरिक श्रम को आदर, सौजन्यता, समाज–सेवा, मानवता की सुदृड़ता, सामाजिक दायित्व की भावना, खोज–प्रवृत्ति तथा टीम भावना आदि।

5. **लोकतन्त्रीय भावना** (Democratic Sense) – नागरिकता, समानता, स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय – सजगता, देशभक्ति, सामाजिक न्याय, समाजवाद, राष्ट्रीय तथा नागरिक सम्पत्ति का महत्व और लोकतान्त्रिक निर्णय आदि।

6. **अहिंसा** (Non-Violence) – सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा, छुआछुत की समाप्ति, ... पर दया, धर्मनिरपेक्षता तथा समस्त धर्मों का सम्मान, सार्वभौमिक मूल्यों में निष्ठा, सत्य, सुन्दर तथा शिव।

उपरोक्त सभी मूल्यों को हम कामना या शुभेच्छा के रूप में देख सकते हैं व वर्तमान परिस्थितियों में इनके प्रभाव को भी देख सकते हैं। इससे गलतियां निश्चित तौर पर कम हुई हैं परन्तु सब कुछ बहुत अच्छा हुआ है ऐसा कहना मुश्किल है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

1.3 चेतना विकास मूल्य शिक्षा (शिक्षा के विकल्प के रूप में)

आदिकाल से ही मनुष्य–परंपरा में शिक्षा की बात है। यह जंगल–युग से ही है। शिक्षा के बारे में आदमी चर्चा करते ही आया है। इस क्रम में हमारे देश में वैदिक–शिक्षा की बात आयी। दूसरे देश में बाइबिल को शिक्षा में लाने की बात हुई। तीसरे देश में कुरान को शिक्षा में लाने की बात हुई। ऐसे ही विभिन्न प्रकार की शिक्षा– परम्पराएं धरती पर स्थापित हुई। यह क्रम चलते–चलते आज के समय में विज्ञान–शिक्षा का सभी देशों में लोकव्यापीकरण हो चुका है। विज्ञान–शिक्षा से अपेक्षा थी कि इससे सबको तृप्ति मिलेगी, लेकिन इससे तृप्ति मिला नहीं।

अभी तक जो कुछ भी शिक्षा में आया, उसके "विकल्प" के रूप में मध्यस्थ–दर्शन का "चेतना–विकास, मूल्य –शिक्षा" का प्रस्ताव है। जंगल युग से आज तक आदमी जीव–चेतना में जिया है। मनुष्य ने जीव–चेतना में जीते हुए, जीवों से अच्छा जीने के क्रम में शरीर–सुविधा से संबंधित सभी वस्तुएं प्राप्त कर लीं। इसमें खाने–पीने, कपड़ा, मकान, यान–वाहन, दूर–संचार की सभी वस्तुएं शामिल हैं। यह सब होने के बावजूद मनुष्य को शिक्षा से संतुष्टि नहीं मिली। इसका मूल कारण यह है – मनुष्य ज्ञान–अवस्था का है, और उसको जीव–चेतना की शिक्षा से संतुष्टि नहीं मिली। इसका मूल कारण यह है – मनुष्य ज्ञान–अवस्था का है, और उसको जीव–चेतना की शिक्षा से संतुष्टि मिल नहीं सकती। इसलिए "विकसित चेतना" के अध्ययन को शिक्षा में लाने के लिए प्रस्ताव है। मानव–चेतना, देव–चेतना, दिव्य–चेतना "विकसित चेतना" है। इस तरह जी कर मनुष्य "कृत–कृत्य" हो सकता है। "कृत–कृत्य" होने का मतलब है – मानव जिस बात के लिए ज्ञान–अवस्था में उदय हुआ है, वह सार्थक

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

होना। इस प्रस्ताव के संपर्क में जो भी आये हैं, उनका यह स्वीकृति है – ऐसा होना बहुत जरूरी है।

परिवार में हर व्यक्ति मानव–चेतना में पारंगत हों, देव–चेतना में जी सकें, दिव्य–चेतना को प्रमाणित कर सकें– ऐसा "**अधिकार**" बन सके।

1.4 चेतना विकास मूल्य शिक्षा – अर्थ एवं परिभाषा

जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण ही चेतना विकास है।

"**चेतना–विकास**" से आशय है – मानव–चेतना में जीने के लिए विश्वास स्वयं में पैदा होना। मानव के लिए मानवत्व ही स्वत्व के रूप में पहचानने की आवश्यकता है। देवत्य और दिव्यत्व श्रेष्ठतर और श्रेष्ठतम हैं। मानवत्व से श्रेष्ठता की शुरूआत है। इस आधार पर इसके लिए पारंगत होने की बात आती है।

मानवीय शिक्षा (चेतना विकास मूल्य शिक्षा)
जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण के लिए

	जीव चेतना	मानव चेतना
1. क्रिया	संवेदनशीलता (मानना आधारित पहचानना, निर्वाह करना)	संज्ञानशीलता (जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना) संज्ञानशीलता से नियंत्रित संवेदनशीलता
2. दृष्टि	प्रिय, हित, लाभ दृष्टि अनियंत्रित– काम, भोग, लाभ उन्माद	न्याय, धर्म (व्यवस्था), सत्य दृष्टि इनसे नियंत्रित प्रिय, हित, लाभ दृष्टि
3. विषय / आशय	आहार, निद्रा, भय, मैथुन	वित्तेषणा, पुत्रेषणा, लोकेषणा, सह अस्तित्व

4. स्वभाव	दीनता, हीनता, क्रुरता	धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा
5. धर्म	जीने की आशा (सुविधा केन्द्रित)	निरंतर सुख से जीने की आशा – समाधान " " " " – ज्ञान " " " "
6. लक्ष्य	सुविधा, संवेदना	समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व (व्यक्ति में) (परिवार में) (समाज में) (प्रकृति में)
7. मानव संबंध–संगठन	समुदाय, वर्ग, जाति, सम्प्रदाय में बटे हुए	अखण्ड समाज–परिवार से विश्व परिवार तक –मानव जाति एक, धर्म एक
8. प्रकृति संबंध	प्रकृति का शोषण प्रतिफल – संसाधन अभाव, प्रदुषण	प्रकृति की सुरक्षा–संवर्द्धन, संरक्षण, सदुपयोग मानव में समृद्धि, शेष प्रकृति की सुरक्षा
9. राज्य	शक्ति केन्द्रित शासन – – शासन व शोषण – परतंत्रता, परराज्य	सार्वभौम व्यवस्था– परिवार से विश्व परिवार तक – स्वयं में व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी–स्वयंस्फूर्त – स्वतंत्रता (स्वयं में व्यवस्था पूर्वक जीना), स्वराज्य (स्वयं में व्यवस्था पूर्वक जीने का वैभव–फैलाव–समाज में व्यवस्था)
10. परंपरा	अमानवीय स्वभाव, दृष्टि, प्रवृत्ति, आचरण, शिक्षा व व्यवस्था को बढ़ावा देने वाली	मानवीय स्वभाव, दृष्टि, प्रवृति, आचरण, शिक्षा व व्यवस्था को पोषण करने वाली

1.5 चेतना विकास मूल्य शिक्षा का उद्‌भव

अभी तक विगत से चली आयी ईश्वरवाद और भौतिकवाद की नजरिया से मानव का अध्ययन संपन्न नहीं हुआ है। इसीलिए विकल्प के रूप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन है। मध्यस्थ दर्शन से सह–अस्तित्व में, सहअस्तित्व से, सहअस्तित्व के लिए मानव का अध्ययन संभव हो गया है।

इस विकल्प में आपको अवगत कराने का प्रयत्न है कि मानव का अध्ययन मानव चेतना सम्मत मूल्य शिक्षा विधि से सर्वसुलभ होने का सभी निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण सम्पन्न हो चुका है। ऐसे केन्द्र में से एक अभ्युदय संस्थान छत्तीसगढ़ की सीमा में कार्यरत है।

सर्व मानव समझदार न्याय पूर्वक जी सकता है, हर समझदार परिवार समाधान– समृद्धि पूर्वक जी सकता है। यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सर्व सुलभ होने की व्यवस्था है। हर व्यक्ति अपने सद्‌विवेक से प्रस्तुत सूचनाओं से अवगत होगें। यही विश्वास है।

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद व चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रणेता श्री ए. नागराज जी (अमरकंटक) हैं। जिनके 20 वर्षों (1950–1970) के गहन अनुसंधान व तप के माध्यम से मानवीय शिक्षा का विकल्प मिला।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1.6 मूल्यों का वर्गीकरण

स्वयं में व परस्परता में जिन भावों की सहज स्वीकृति है वे मूल्य हैं।

मानव संबंधों में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज बोध सहित तीस मूल्य है जिसका विभाजन निम्न प्रकार से किया गया है –

जीवन मूल्य	चार
मानव मूल्य	छह
स्थापित मूल्य	नौ
शिष्ट मूल्य	नौ
वस्तु (उत्पादित) मूल्य	दो

का पूर्ण अध्ययन एवं बोध

जीवन मूल्य –

समाधान = सुख

समाधान समृद्धि = शांति

समाधान समृद्धि अभय = संतोष

समाधान समृद्धि अभय सह अस्तित्व सहज प्रमाण = आनन्द

मानव मूल्य –

धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा – मानव में

स्थापित मूल्य –

विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, श्रद्धा, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम,

– – संबंध में अनुभव

शिष्ट मूल्य– सौजन्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता, सौम्यता, सहजता, उदारता, सौहाद्रता, निष्ठा, संबंध में व्यक्त

वस्तु मूल्य – उपयोगिता व कला – जड़ वस्तु से संबंध में

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1.7 मूल्यों का महत्व –

मानव संबंधों में कुल सात प्रधानतः मानव संबंध है एवं तीन नैसर्गिक संबंध है जो – जीवावस्था, प्राणावस्था व पदार्थावस्था के साथ है।

मानव संबंधो में निहित आशय मूल्यों का निर्वाह है, जो इस प्रकार है –

सात संबंध	किया
माता–पिता	पोषण– संरक्षण
भाई–बहन	परस्पर अभ्युदय संयोग (सहयोग)
मित्र–मित्र	परस्पर पूरक
गुरू – शिष्य	प्रामाणिक–जिज्ञासु
साथी– सहयोगी	दायित्व–कर्तव्य
पुत्र–पुत्री	अभ्युदय, उपयोगिता, पूरकता
पति–पत्नी	यतीत्व, सतीत्व

मानवीय चेतना संपन्न मानव संबंध में स्थापित व शिष्ट मूल्य निम्न है और यही उसका महत्व है–

स्थापित मूल्य	शिष्ट मूल्य
(1) कृतज्ञता – प्राप्त सहायता उपकार के प्रति स्वीकृति प्रसन्नता व निरंतरता की स्वीकृति	(1) सौम्यता– स्वयं स्फूर्त प्रणाली, पद्धति से स्वयं का नियंत्रण
(2) गौरव – विकसित (जागृत) को पहचान एवं उनके अनुरूप होने मे उत्साह और निरंतरता	(2) सरलता– ग्रंथि (तनाव) रहित अंगहार एवं उसका प्रकाशन
(3) श्रद्धा – प्रामणिकता, श्रेष्ठता की ओर प्रवृत्ति एवं संकल्प सहित गति सकियता	(3) पूज्यता– गुणात्मक परिवर्तन के लिए

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

(4) प्रेम– पूर्णता सहज प्रमाण, दया कृपा करूणा की संयुक्त अभिव्यक्ति पूर्णता में नित्य रति, पूर्णता की सहज निरंतरता	(4) अनन्यता – जागृति पूर्णता के लिए योग्य पहचान, प्रमाण सहज निरंतरता
(5) विश्वास– संबंध निर्वाह निरंतरता सहित मूल्यों के निर्वाह की निरंतरता	(5) सौजन्यता– सहकारिता, सहयोगिता, पूरकता, उपयोगिता
(6) वात्सल्य – अभ्युदय सर्वतो–मुखी समाधान के अर्थ में शोषण संरक्षण व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में निरंतरता	(6) सहजता – यथास्थिति सहज स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन , सामाजिक, उत्पादन स्वावलंबन प्रमाण
(7) ममता– स्वयं में, से, के लिए प्रतिरूपता सहज स्वीकृति, उत्सव निरंतरता	(7) उदारता – प्रतिफलापेक्षा विहीन कर्तव्य दायित्व वहन, तन मन धन अर्पण
(8) सम्मान– व्यक्तित्व एवं प्रतिभा में श्रेष्ठता सहज प्रमाण का पहचान, स्वीकृति–प्रमाणित होने की प्रवृत्ति	(8) सौहाद्रता– स्पष्टता से मूल्यांकन, कियाकलाप में स्पष्टता, सार्थकता
(9) स्नेह– संतुष्टि प्रसन्नता, उत्सव में, से, के लिए स्वयं स्फूर्त मिलन सान्निध्य की निरंतरता	(9) निष्ठा– मानवीयता पूर्ण विचार व्यवहार में निरंतरता, मानवीयता सहित व्यवस्था सहज वर्तमान

सभी संबंधों का निर्वाह ही व्यवस्था है। अभिव्यक्ति, संप्रेषणा सहज प्रकाशन = भाषा भाव मुद्रा अंगहार प्रकिया सहित संप्रेषणा = सटीक भाषा (अर्थ संगत) = चित्र लेख रूप में = स्वीकृत संप्रेषणा = अभिव्यक्ति =

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

संबंधों का निर्वाह सहज प्रमाण। किशोरावस्था तक पहचान संबोधन और दस वर्ष के पश्चात् समझ सहित निर्वाह परस्परता में अपेक्षा = आवश्यकता।

संबंध निर्वाह मूल्य

(1) **माता–पिता के साथ संतान का संबंध**

विश्वास निर्वाह और उसकी निरंतरता, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम पूर्वक, सरलता, सौम्यता, अनन्यता भाव विधि सहित वस्तु सेवा समर्पण समेत तृप्ति– समाधान प्रमाण वर्तमान होना।

(2) **पुत्र–पुत्री (संतान का) के साथ माता –पिता अभिभावक – विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

ममता, वात्सल्य, प्रेम, उदारता, सहजता, अनन्यता भाव वस्तु सेवा समर्पण के रूप में वर्तमान होना।

(3) **भाई–बहन संबंध में विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

सम्मान, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सौहाद्रता, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में है।

(4) **गुरू शिष्य के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

प्रेम वात्सल्य, ममता, अनन्यता, सहजता, उदारता भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में वर्तमान

(5) **शिष्य गुरू के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

गौरव, कृतज्ञता, सम्मान, प्रेम, सरलता, सौजन्यता, सहजता, अनन्यता भाव पूर्वक जिज्ञासा सहित वस्तु और सेवा का अर्पण–समर्पण रूप में है।

(6) **पति–पत्नी के परस्परता में विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सरलता, सौहाद्रता, अनन्यता भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(7) **साथी सहयोगी के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**
स्नेह, ममता, दया, सहज निष्ठा, उदारता, दायित्व का कर्तव्य सहित वस्तु व सेवा प्रदान करने के रूप में।

(8) **सहयोगी साथी के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**
गौरव, सम्मान, कृतज्ञता, सहजता, सरलता, सौहाद्रता, सौजन्यता भाव सहित सेवा समर्पण के रूप में है।

(9) **मित्र–मित्र के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**
स्नेह, सम्मान, प्रेमपूर्वक निष्ठा, सौहाद्रता, अनन्यता भाव सहित वस्तु व सेवा समर्पण अर्पण के रूप में ।

(10) **परिवार व्यवस्था में विश्वास निर्वाह की निरंतरता–**
मानवीयता पूर्ण आचरण सहित संबंधों का निर्वाह समेत किया गया व्यवहार कार्य– परिवार में, से, के लिए पोषण, संरक्षण समाज गति के लिए आवश्यकता से अधिक उत्पादन संपन्नता उपयोग–सदुपयोग प्रयोजन पूर्वक व्यवसथा प्रमाण वर्तमान– वैभव है।

1.8 अध्ययन का समीक्षात्मक आधार

इस प्रकार का अध्ययन केवल निदानात्मक एवं सुधार तक सीमित नहीं है वरन् यह प्रेरणात्मक होने के साथ न केवल शिक्षकों के लिए अपितु संपूर्ण मानव के लिए उपयोगी है। इसके अध्ययन द्वारा शिक्षकों में पड़ने वाले चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव को मापने में सहायक सिद्ध होगा। इस समस्या के अध्ययन द्वारा विभिन्न शिक्षकों को मूल्य शिक्षा की आवश्यकता व प्रभाव का अध्ययन करके आवश्यकतानुसार सुधार हेतु सुझाव दिये जा सकते है।

यह अध्ययन शिक्षकों एवं छात्रों दोनो के लिए महत्वपूर्ण है ऐडम्स ने शिक्षा को द्वि ध्रवीय प्रकिया के अन्तर्गत एक ध्रुव पर शिक्षक तथा दूसरे पर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

विद्यार्थी को मानते हुये उन्हें अन्योन्याश्रित बताया और कहां कि ये दोनो ध्रुव एक दूसरे को प्रभावित करते है।

किसी भी शैक्षिक समस्या का क्षेत्र व्यापक होता है। और वे सार्थकता की दृष्टि से बहुआयामी भी होते है। हर समस्या का समाधान शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है। इसका कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से शिक्षा से जुड़ा होता है। और दूसरी ओर वह समाज के भूत, वर्तमान और भविष्य से। चूंकि शिक्षा का अभिन्न अंग मूल्य है। इसलिए इसका संबंध शिक्षा, समाज बालक, तीनों से है। इस दृष्टि से इस अध्ययन का क्षेत्र व्यापक है। और इसकी सार्थकता भी अधिक है।

इस प्रकार समस्या की इसी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत लघुशोध कार्य में अध्ययन के लिये रायपुर एवं दुर्ग जिले के शिक्षक जो चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन किये है एवं जो चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन नहीं किये हैं। ऐसे शिक्षकों का चयन किया गया है एवं अध्ययन करने वाले शिक्षकों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का शिक्षकों के व्यक्तित्व में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

1.9 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) संयुक्त राष्ट्र संघ का एक घटक निकाय है जिसका कार्य शिक्षा, प्रकृति तथा समाज विज्ञान, संस्कृति तथा संचार के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा समझ–बूझ को बढ़ावा देना है। इसकी स्थापना के पीछे इस समझ का आदर्श है कि "चूंकि युद्ध लोगों के मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं, इसलिए मनुष्य के मस्तिष्क में ही शांति की रक्षा का सृजन होना चाहिए"।

यह सृजनात्मक कार्य शिक्षा में मूल्य शिक्षा के समावेश से ही संभव है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

"जानकारी इकट्ठा करना और तथ्यों को बटोरकर आपस में मिलाना ही शिक्षा नहीं है, शिक्षा तो जीवन के अभिप्राय को उसकी समग्रता में देखना समझना है।....... पूर्णतः समन्वित प्रज्ञाशील मनुष्य तैयार करना है। परीक्षा और उपाधि प्रज्ञा का मानदंड नहीं है।"

उक्त संदर्भ में आज की शिक्षा हमें बौद्धिक और सूचना–संपन्न भले ही बना रही हो परन्तु यह भी सच है कि हमारी संज्ञानशीलता एवं संवेदनशीलता का ह्रास हुआ है। शिक्षा देने का काम शिक्षक का है और एक सच्चे शिक्षक के लिए अध्यापन तकनीक नहीं, वह उसकी जीवनपद्धति है। क्योंकि हर व्यक्ति के लिए आचरण ही प्रमाण है।

हमारे देश में शिक्षा के उपर्युक्त उद्देश्यों के अनुरूप सरकार के द्वारा National Policy on Education (1992) के तहत् कहा गया है कि –

"........ value education is an integral part of school curriculum. It highlighted the values drawn from national goals, universal perception, ethical considerations and character building. It stessed the role of education in combating obscurantism, religious fanaticism, exploitation and injustice as well as the inculcation of value."

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) की संस्था यूनेस्को (UNESCO) के द्वारा भी शिक्षा के मूल्योन्मुखी होने कहा गया है। इसमे शिक्षा के कार्यक्रमों में शान्ति (Peace), मानवाधिकार (Human Rights) तथा मानववादी दृष्टिकोणों (Humanistic Outlook) को समर्थित किया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

प्रस्तुत अध्ययन की सार्थकता राष्ट्रीय, सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से भी अधिक है। औपचारिक और अनौपचारिक सभी प्रकार की शिक्षा के उद्देश्य है विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में ऐसे मूल्यों का विकास जो बालक राष्ट्र, समाज, के लिए हितकारी हो। अतः इस अध्ययन का क्षेत्र व्यापक है और सार्थकता या उपयोगिता की दृष्टि से आधुनिक समय की यह विशेष मांग है।

इस समस्या की आवश्यकता और महत्व विभिन्न दृष्टिकोण से उपयोगी और बहुउद्देशीय है समाज, शिक्षक, शिक्षा सभी के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि बालक के निर्माण में इन सभी का योगदान होता है।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में कहां जा सकता है कि शिक्षकों के लिए यह अध्ययन बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण है और इस अध्ययन का महत्व भी अधिक है क्योंकि बालक के लिए यह आवश्यक है कि उसे मूल्यों का ज्ञान हो।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय–2 संबंधित शोध अध्ययन,समस्या, क्षेत्र, उद्देश्य तथा परिकल्पना

2.1 भूमिका

2.2 संबंधित शोध अध्ययन

2.3 समस्या क्या है ?

2.4 समस्या कथन

2.5 प्रयुक्त चर

2.6 क्रियात्मक शब्दों की परिभाषाएं

2.7 समस्या का स्पष्टीकरण

2.8 प्रस्तुत शोध का उद्देश्य

2.9 अध्ययन की परिकल्पना

2.10 अध्ययन की क्षेत्र एवं परिसीमन

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय – 2

समस्या, क्षेत्र, उद्देश्य तथा परिकल्पना

2.1 भूमिका

अनुसंधानकर्ता का प्रथम कार्य समस्या का चयन करना होता है। निश्चय ही समस्या अनुसंधान आधारित होता है। समस्या का चयन न केवल नवीन अनुसंधानकर्ताओं के लिए बल्कि अनुभवी व्यक्तियों के लिए भी कठिन कार्य होता है। कभी–कभी अनुसंधानकर्ता ऐसी समस्या का चयन कर लेते है, जो कि अनुसंधान के योग्य नहीं होती अथवा उसका अनुसंधान कार्य अत्यंत दुष्कर होता है। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि विश्वविद्यालय में विद्यार्थी अनुसंधान के लिए पंजीकरण के उपरांत अपना प्रकरण बदलते रहते हैं। इसका मुख्य कारण सही समस्या का चुनाव नहीं करना ही होता है।

अनुसंधान के लिए निश्चित उद्देश्य भी अत्यंत आवश्यक है। निश्चित अनुसंधान उपभोक्ता की कुछ आवश्यकतायें अवश्य ही होगी और उसका कोई लक्ष्य तथा उद्देश्य भी होगा जिसको की वह प्राप्त करना चाहता है। ऐसा व्यक्ति वास्तव में जिसकी कोई आवश्यकता अथवा उद्देश्य नहीं है अतः उसकी कोई समस्या भी नहीं होगी।

इसी प्रकार अनुसंधानकर्ता के लिये निश्चित परिकल्पना भी होना आवश्यक है। साधारणतः परिकल्पना का अर्थ एक उपकथन से होता है। जो कि किसी समस्या की अवधारणा होती है। तथा अनुसंधानकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता है। परिकल्पना में कथन का स्वरूप एक व्याख्या के रूप में होता है" जो कि प्रायः सिद्धांत अथवा अवलोकन पर निर्धारित होता है। अनुसंधान में जब किसी सिद्धांत की समंको तथा प्रमाण के आधार पर प्रमाणिकता की जाती है। तब उसे परिकल्पना की संज्ञा दी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

जाती है। संपूर्ण अनुसंधान की क्रियाएं निश्चित ही परिकल्पनाओं पर ही निर्भर होती है। परिकल्पनाओं की प्रमाणिकता से ही निष्कर्ष सामने आता है।

'इस प्रकार एक अच्छे अनुसंधान के लिये तीनो का होना अत्यंत आवश्यक है।'

1.2 संबंधित शोध अध्ययन :-

संबंधित शोध से तात्पर्य अनुसंधान से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तको ज्ञानकोंशो पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य का आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं।

किसी भी क्षेत्र का संबंधित साहित्य उस आधार शिला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता हैं। यदि संबंधित साहित्य के अध्ययन व सर्वेक्षण के द्वारा हम नींव को दृढ़ नहीं कर लेते, तो हमारा कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना हैं अथवा पुनरावृत्ति भी हो सकती है – डब्ल्यू.आर. बोर्ग के अनुसार

इस संबंध में गुड बार तथा स्केट्स का कथन है –

एक कुशल चिकित्सक के लिए आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधि आधुनिकतम् खोजो से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिये भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

संबंधित साहित्य, अनुसंधान कार्य के लिए एक सैद्धांन्तिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। इसके द्वारा सभी स्तरों पर कार्य करना सरल हो जाता

www.madhyasth-darshan.info Information Portal

है। यह प्रत्येक धारणा को स्पष्ट करने के साथ ही किस क्षेत्र में कहां, कितना कार्य हो चुका है ? किस प्रकार की परिकल्पनायें लोगों ने तैयार की किस प्रकार आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण किया ? और उसका क्या परिणाम आया से सभी प्रश्नोत्तर हमारे शोध कार्य में अविस्मरणीय सहायता प्रदान करते है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में चयन की गई समस्या के समाधान हेतु विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं पुस्तकों, ज्ञान कोषों प्रकाशित और अप्रकाशित शोध प्रबंधो आदि से जानकारी एकत्रित की गई है। इससे संबंधित संक्षिप्त और व्यवस्थित जानकारी यहां उल्लेखनीय है –

(1) कु. हिना चावड़ा (व्याख्याता मूल्य शिक्षा –एन.आई.टी. रायपुर) –

इन्होंने मध्यस्थ दर्शन आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा का पारस्परिक संप्रेषण निपुर्णता पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस संदर्भ में यह उपकल्पना की गयी कि **"मध्यस्थ दर्शन आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा"** का पारस्परिक सम्प्रेषण निपुर्णता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

परिकल्पना अनुसार मध्यस्थ दर्शन आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त वयस्कों ने बेहतर पारस्परिक संप्रेषण निपुर्णता का प्रदर्शन किया।

(2) कार्तिक राय चौधरी (1958) –

मूल्य मापनी के क्षेत्र में हमारे देश में सर्वप्रथम सराहनीय कार्य अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कार्तिक राय चौधरी द्वारा किया गया। इन्होनें सन् 1958 में आलपोर्ट बर्नम, लिण्डजे के मूल्य अध्ययन का भारतीय स्थिति में अनुकूलन किया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

इस अध्ययन के अंतर्गत निम्न महत्वपूर्ण उद्देश्य सम्मिलित किये गये :–

1– विद्यार्थियों में राजनैतिक, सैद्धांतिक, आर्थिक, कलात्मक, सामाजिक, धार्मिक मूल्यों में परस्पर सहसंबंध का अध्ययन करना।

2– प्रत्येक मूल्य श्रेणी का रूचि–अभिवृत्ति एवं योग्यता से भी सहसंबंध ज्ञात किया जाना।

(3) बी. रमादेवी (1963) –

बी. रमादेवी ने भारतीय स्त्रियों के लिये एक टेडिशनल वेल्यू स्केल की रचना की। इसमें 60 वास्तविक और 5 जांच पद निहित है। यह चार मूल्यों नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक तथा पारिवारिक का मापन करती है इसके प्रत्युत्तर के लिये पांच बिंदु निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जाता है तथा कम प्राप्तांक टेडिशनल मूल्य सकारात्मक अभिवृत्त इंगित करते है। इसका पुर्नपरीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.66 ज्ञात की गयी।

(4) अनिरूद्ध पांडे (1976) –

अनिरूद्ध पांडे ने सामान्य तथा अति सामान्य किशोरों के समायोजन के व्यक्तित्व मूल्यों तथा व्यावसायिक रूचि का योगदान पर अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु 10वीं और 12वी के 15–18 वर्ष के 400 किशोरों का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये –

1. कलात्मक व धार्मिक मूल्य के संबंध में सामान्य व अति सामान्य किशोरों में कोई अंतर नहीं पाया गया।
2. सामान्यतः अति सामान्य किशोर आर्थिक राजनीतिक मूल्यों के संदर्भ में सामान्य किशोरों से उच्च पाये गये।

www.madhyaprdesh darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

(5) **पटेल (1980) –**

पटेल ने सत्य सांई संस्थान के द्वारा संचालित भौक्षिक संस्थानों मूल्य अभिमुखीकरण के विषय पर एक अध्ययन किया इसके मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार है –

1. सत्य सांई बाबा के उपदेशो का छात्रों के नैतिक मूल्यों के उत्थान पर सकारात्मक व सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. हॉस्टल में रहने वाले व अपने घरों में रहने वाले छात्रों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

(6) **पिंकीरनिल (1981) –**

पिंकीरनिल ने छात्रों के स्कूल के भीतर व स्कूल के बाहर के व्यवहार का अध्ययन किया इसके मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार है :–

1. जो बालक औपचारिक नैतिक शिक्षा ग्रहण करते है उनके व अन्य बालकों के व्यवहार का अध्ययन करना।
2. छात्रों, पालको व शिक्षको के विचार, नैतिक मूल्यों का शिक्षा के संबंध ज्ञान करना। इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार है।
3. शाला के भीतर व बाहर क्षेत्रों के व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है।
4. औपचारिक नैतिक शिक्षा ग्रहण करने वाले बालक व्यवहार में अन्य बालकों के अपेक्षाकृत ज्यादा अच्छा व्यवहार करते हैं।

(7) **गुप्ता (1984) –**

दयानंद महिला विद्यालय कानपुर की श्रीमती कुसुम गुप्ता ने कार्यरत तथा अकार्यरत महिलाओं के बालकों के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होनें नैतिक मूल्य मापनी का निर्माण किया जिसका ग्रमापीकरण इलाहाबाद

www.ugcpath-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

विश्वविद्यालय के श्री दुर्गानंद सिन्हा तथा मीरा वर्मा द्वारा किया गया इस मापनी पर किये गये अंक व्यक्ति के नैतिक मूल्यों को निर्दिष्ट करते हैं।

विदेशी पृष्ठभूमि के अंतर्गत मूल्य से संबंधित अध्ययन :–

1. **आलपोर्ट, वर्तन व लिण्डजे (1951)** – आलपोर्ट व वर्णन ने 1931 में मूल्य अध्ययन की रचना की तथा सन् 1951 में लिण्डजे ने इसे संशोधित किया। इसका मूल्य अध्ययन मुख्य रूप से स्प्रेंगर के वर्गीकरण पर आधारित है इस वर्गीकरण के अंतर्गत सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनितिक व धार्मिक मूल्य सम्मिलित हैं।
2. **कैलेंडर एवं हावर्ड एच (1980)** – इन्होंने अपने शोधकार्य मूल्य एवं मनोवैज्ञानिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन किया और यह निष्कर्ष प्राप्त किया जो मूल्य नैतिक एवं अनुभव जन्म होते है वे मूल्य ही समायोजित होते है और उन्ही मूल्यों का समाज द्वारा पालन होता है।
3. **मैस्ग्रेव तथा पीटर डब्ल्यू (1984)** – इन्होनें कुछ आस्ट्रेलियाई किशोरों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष इस प्रकार है –
   1. छात्रायें छात्रों की अपेक्षा सामाजिक मूल्यों तथा व्यक्तिगत स्थिरता में अधिक दृढ़ थी।
   2. छात्राओं में श्रेष्ण मूल्यों की प्रधानता थी।
   3. विद्यार्थियों के नैतिक कार्यों पर उनकी आयु, अभिवृत्ति तथा नैतिक बनावट के कारण पड़ने वाले प्रभावों का भी स्पष्ट प्रमाण पाया गया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

4. अंतर व्यक्तिगत संबंधों का नैतिक मूल्यों नर प्रभाव अधिक दृढ़ पाया गया।

4. **डैश (1986) –** इनके अध्ययन का विषय शिक्षा द्वारा नैतिक मूल्य था। अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है –

1) भारत व विश्व में नैतिक शिक्षा की वृद्धि व विकास का अध्ययन।

2) नैतिक मूल्यों के संदर्भ में व्यक्तित्व विकास हेतु कार्यक्रम की रूपरेखा बनाना।

3) सत्य का अर्थ खोजना ।

इन्होनें अपने अध्ययनों से निष्कर्ष प्राप्त किया कि भारतीय जन एवं वहां की संस्कृति सत्य को ही चरम नैतिक मूल्यों मानती है।

5. **संतोष कुमार शर्मा (2000)–** संतोष कुमार शर्मा 2000 में विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव पर अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष है –

1) विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं उनके नैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

2) निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक संबंध पाया गया। इनका नैतिक मूल्य भी निम्न होगा।

3) उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का नैतिक मूल्य उच्च होंगें।

4) छात्राओं सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उसके नैतिक मूल्य मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

5) निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के छात्राओं के नैतिक मूल्य भी निम्न होंगें।

6) उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति में आने वाली छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं नैतिक मूल्य में सार्थक संबंध होगा।

6. **प्रतिमा (1988)** – मॉरल डेव्हलपमेन्ट इन चिल्ड्रनः एन एक्सपेटीमेन्टल स्टडी। पी.एच.डी. शोध, (शिक्षा) दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा।

7. **गीतानाथ, पी.एस. (1988)**– स्टडी ऑफ मॉरल जजमेन्ट इन रिलेशन टू सम सेलेक्टेड वेरिएबल्स। पी.एच.डी. (शिक्षा) श्री वेन्केटेश्वर विश्वविद्यालय।

8. **पंड्या एस. (1989)** – ए. कम्पेरेटिव ऑफ इफेक्टीवनेस ऑफ सेलेक्टेड मेथड्स फॉर इम्पारटिंग इन्सट्रक्सन्स इन मॉरल वैल्यूज एण्ड देयर डेव्हलेपमेन्ट अभन्ग अपर प्रायमरी स्कूल चिल्ड्रन प्रतिवेदन, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर।

9. **गुप्ता, अरूण कुमार एवं गंगल, रेणु (1989)** – वेल्यू इम्फेसिंस एस परसिल्ड बाय पुपिल्स ऑफ प्रायमरी, मिडिल एण्ड हाई स्कूल स्टेज इन डिफ्रेन्ट इन्स्टीट्युसन्स। "इंडियन एजूकेशनल रिव्यवू अंक 24 (1): 133–142

10. **गुप्ता, रंजना (1989)** – "ए स्टडी ऑफ वैल्सूज एण्ड मॉरल जजमेन्ट ऑफ एडोलस्टोन्टस ऑफ टू रेप्रेसेन्टी सेन्टर्स ऑफ व्हेर्स्टन एण्ड सेन्ट्रल यू.पी.।" पी.एच.डी. शोध,(शिक्षा), आगरा विश्वविद्यालय।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

11. **कपानी, मधु (1990)** – ''ऐजूकेशन इन ह्यूमन वैल्यूज कन्सेप्ट एण्ड प्रैक्टिकल इम्पलिकेशन्स। ''पी.एच.डी. शोध, (शिक्षा), श्री सत्य सांई उच्चतर अधिगम संस्थान।

12. **बाजपेयी, अमिता (1991)** – ''उन एक्सपेरिमेन्टल स्टडी ऑफ एन एजूकेशनल इन्टरवेन्शन करिकूलम फॉर वैल्यूज डेव्हलपमेन्ट एण्ड इट्स फैसिलिटेटिव इफेक्ट अपॉन द डेव्हलेपमेन्ट ऑफ मॉरल जजमेन्ट।'' पी.एच.डी. (शिक्षा), लखनऊ विश्वविद्यालय।

13. **दास, आर.सी. (1991)** – ''ए स्टडी ऑफ मेथड्स एडाप्टेड बाय सेलेक्टेड सेकेन्डरी स्कूल्स इन इंडिया फॉर डेव्हपमेन्ट ऑफ मॉरल–ऐथिक वैल्यूज एण्ड मेजरमेन्ट ऑफ वैल्यू जजमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट ऑफ क्लास IX ऑफ दिस स्कूल्स। एक अध्ययन, क्षेत्रिय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर।

14. **शाह, हंस मुलकचंद. (1992)** – ''एन इन्व्हेस्टीगेशन इन टू द वैल्यूज ऑफ हायर सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्टस ऑफ सौराष्ट्र।'' पी. एच.डी. शोध, (शिक्षा), सौराष्ट्र विश्वविद्यालय।

15. **बनौ, कुओत्सू. (1992)** – ए स्टडी ऑफ कॉलेज एजूकेशन इन नागालैण्ड इन रिलेशन टू देयर सेल्फ कन्सेप्ट। पी.एच.डी. शोध, (शिक्षा), उत्तर–पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, नागालैण्ड।

16. **दूबे, रामजी, (1992)**– ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द कन्सेप्ट एण्ड इम्पलिमेन्टेशन ऑफ वैल्यू ऐजूकेशन इन इंडिया एट स्कूल लेवल सिन्स 1947 टू 1986। पी.एच.डी. शोध, (शिक्षा), पटना विश्वविद्यालय।

17. **किश्चेनबाउन, हॉबर्ड (1992)** – ''ए कम्पेटिव मॉडल फॉर वैल्यू एजूकेशन एण्ड मॉरल एजूकेशन। फी. डेल्टा. कप्पन, अंक 79 (10): 77176

www.madhyasth-darshan.info ... Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

2.3 समस्या क्या है ?

टॉउन सेंण्ड के शब्दों में **"समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक कथन है कि जिसमें एक समस्या के समाधान को प्रस्तावित किया जाता है।"**

करलिंगर ने समस्या के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक कथन है जिससे यह जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। कि दो या दो से अधिक चरों में किसी प्रकार का संबंध पाया जाता है।"

इस प्रकार एक समस्या के संबंध में उठाये गये प्रश्न के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मैक्गुइगन का कहना है कि "यदि एक प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता तब वह वास्तव में प्रश्न ही नहीं है। विज्ञान में केवल समाधान योग्य समस्याओं के ऊपर ही अन्वेषण किये जाते हैं। एक समाधान योग्य समस्याओं के ऊपर ही अन्वेषण किये जाते हैं।

एक समाधान योग्य समस्या के स्वरूप के विषय में मैक्गुइगन ने आगे लिखा है कि एक समाधान योग्य समस्या एक ऐसे प्रश्न होते है जिसका उत्तर एक व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के आधार पर दिया जा सकता है।

2.4 समस्या का कथन

"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन"

का शिक्षकों के व्यक्तित्व में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

2.5 समस्या का चर :-

करलिंगर के शब्दों में –"चर एक ऐसा गुण होता है जिसकी अनेक मात्राएँ हो सकती है। साधारणतः प्रयोग में जिस चर पर नियंत्रण रहता है, उसे स्वतंत्र चर कहते है। स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तित होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है उसे आश्रित चर कहा जाता है।

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र तथा आश्रित चर निम्नलिखित है –

स्वतंत्र चर – चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन

आश्रित चर – शिक्षक

2.6 क्रियात्मक शब्दों की परिभाषा

समस्या का चयन हो जाने के बाद लघु शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण कार्य समस्या का परिभाषीकरण समस्या के मूल व इसकी व्यवहारिकता को स्पष्ट करता है। समस्या को परिभाषित करने का अर्थ है व्यापक क्षेत्र को सुव्यवस्थित करना।

"परिभाषीकरण का तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा संपूर्ण समस्या के क्षेत्र के बाहर निकालकर स्पष्ट करना है।

चेतना : – संज्ञानीयता,ज्ञान, विज्ञान विवेक संपन्नता।

– ज्ञान, साम्यऊर्जा, ईश्वर, परमात्मा शून्य, निरपेक्ष शक्ति।

विकास :– न्यून मूल्य से अधिक मूल्य की ओर परिणाम ही विकास है।

– जीवन पद में संक्रमित होना, गुणात्मक परिवर्तन ही विकास है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ

चेतना विकास – जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण ही चेतना विकास है।

मूल्य : – प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता ही मूल्य है।

– जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य उपयोगिता मूल्य व कला मूल्य का प्रमाण पंरपरा।

– यर्थाथता का, अर्थ का, भागीदारी का, चिंतन ही मूल्य है।

शिक्षा : – शिष्टता पूर्ण दृष्टि की उदय की प्रक्रिया।

– अस्तित्व में जीवन सहज मूल्य, मानव मूल्य, व्यवसाय मूल्य, स्थापित मूल्य, एवं शिष्ट मूल्य के प्रति निर्भ्रम जानकारी सहित व्यवसाय, व्यवहार चेतना की प्ररिष्कृति ही शिक्षा है।

प्रतिभा : – समझदारी ईमानदारी का संयुक्त स्वरूप, ज्ञान–विवेक विज्ञान संपन्नता यही प्रतिभा है।

– निपुर्णता, कुशलता पाण्डित्यपूर्ण अभिव्यक्ति संप्रेषण प्रकाशन

– व्यक्तित्व के साथ कार्य व्यवहार ही प्रतिभा है।

व्यक्तित्व : – मानव का त्व या व्यवस्था ही व्यक्तित्व हैं।

व्यवस्था का मतलब है होना।

व्यक्तित्व – मानवीयता पूर्ण आहार, विहार, व्यवहार सहित व्यवस्था में भागीदारी ही व्यक्तित्व है।

– मानव के आहार, विहार, व्यवहार से ही उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन होता है।

स्त्रोत/संदर्भ – (ए.नागराज,परिभाषा संहिता जीवन विद्या प्रकाशन (अमरकंटक)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

2.7 समस्या का स्पष्टीकरण

वर्तमान में 99 प्रतिशत से भी अधिक व्यक्ति जीव चेतना में जी रहे हैं इसीलिए इतनी अराजकता, असमानता, मानव में घुटन, परिवार में विघटन, प्रकृति में असंतुलन है। क्योंकि जीव चेतना में जीता हुआ मानव कोई भी क्रिया जानने समझने के आधार पर नहीं अपितु मानने के आधार पर करता है। मानने के आधार पर ही पहचानना व निर्वाह करना होता है। जीव चेतना में मानने का आधार भय, प्रलोभन व आस्था (बिना जाने मान लेना) ही है। यदि मानना गलत होता है तो पहचानना व निर्वाह करना भी गलत ही होता है। जीव चेतना की अधिकांश मान्यताएं गलत व भ्रमित होती है। अभी वर्तमान में निम्न प्रचलित मान्यताऐं देखने को मिलता है ।

जीव चेतना के कारण प्रचलित, भ्रमित मान्यताऐं –

1. आवश्यकताएं असीम है साधन सीमित है ।
2. धन ही सब कुछ है।
3. सुविधा आधुनिकतम व अधिकतम ही जीवन शैली है।
4. इन्द्रियों में ही सारा सुख है। (इन्द्रिगत संवेदनाओं में – शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध)

उपरोक्त प्रचलित मान्यताओं के कारण आज अधिकतर व्यक्ति लाभोन्मादी, भोगोन्मादी व कामोन्मादी हो गया है। यही समस्याओं की जड़ है, इसका कारण है आवश्यकताओं की सही पहचान व समझ का नहीं होना। हमें वर्तमान में लाभोन्मादी अर्थशास्त्र, भोगोन्मादी समाजशास्त्र व कामोन्मादी मनोविज्ञान के स्थान पर मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद से निःसृत आवर्तनशील अर्थशास्त्र, व्यवहारवादी समाजशास्त्र व मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान की आवश्यकता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानव चेतना में हम संज्ञानशील होते हैं, समझदार होते हैं। जानने (समझने) के आधार पर मानना, पहचानना व निर्वाह करना होता है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अध्ययन में हम स्वयं को मानव रूप में अर्थात जीवन (मैं/स्वयं) व शरीर के संयुक्त रूप में पहचानते हैं व मेरी (जीवन/स्वयं की) आवश्यकताओं को सहीं सहीं पहचानते हैं तो समझ में आता है, मेरी (जीवन/स्वयं की) आवश्यकताऐं अभौतिक है, भाव है, मूल्य है, असीमित है, निरंतर है, सुख, समाधान, प्रेम, स्नेह, विश्वास, सम्मान आदि है। इसके पूर्ति का तरीका समझ है, समाधान है। जबकि शरीर की आवश्यकता भौतिक–रासायनिक वस्तु है, जो प्रकृति के साथ उत्पादन व स्वावलंबन से पूरा होता है। फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन में यह सूत्र है – मानव की भौतिक आवश्यकताएँ निश्चित है, साधन पर्याप्त है। अतः हर व्यक्ति की आवश्यकताएँ समृद्धि के साथ पूरा हो सकता है।

चाहत के रूप में हर व्यक्ति मानव चेतना में ही जीना चाहता है और यह मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा के विधिवत अध्ययन से पूरा भी हो सकता है।

2.8 प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

1. मानवीयता पूर्ण जीवन को स्थापित करना।
2. व्यक्ति एवं प्रतिभा में संतुलन उदय हो पाना।
3. समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओ को मानवीय चेतना में परिवर्तन करना।
4. सह–अस्तित्व एवं समाधानपूर्ण सामाजिक चेतना को सर्वसुलभ करना।
5. प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही न्याय का याचक है एवं सदा सही करना चाहता है उसमें न्याय प्रदायी क्षमता तथा सही करने की योग्यता प्रदान करना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

6. प्रत्येक मनुष्य जीवन में अनिवार्यता एवं आवश्यकता के रूप में पाये जाने वाले बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृति की समन्वयता को स्थापित करना।

7. शिक्षा प्रणाली पद्धति एवं व्यवस्था की एक सूत्रता को मानवीयता की सीमा मे स्थापित करना।

प्रकृति के विकास एवं इतिहास के अनुषंगिक मनुष्य, मनुष्य–जीवन, लक्ष्य, जीवनीक्रम तथा जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट तथा अध्ययन सुलभ करना।

8. विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय शाला एवं शिक्षा मंन्दिरो की गुणात्मक एकता एवं एक–सूत्रता को स्थापित करनां।

9. प्रत्येक विद्यार्थी और व्यक्ति को अखण्ड समाज के भागीदार के रूप में प्रतिष्ठत करना।

10. शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक की तारतम्यता को व्यवहार शिक्षा के आधार पर स्थापित करना।

विगत वर्तमान एवं आगत पीढ़ी की परस्परता के प्रत्येक स्तर में तारतम्यता, एक सूत्रता, सौजन्यता, सहकारिता, दायित्व तथा कर्तव्यपालन योग्य क्षमता का निर्माण करना।

11. मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था को सर्वसुलभ बनाना।

प्रत्येक मनुष्य में अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग योग्य क्षमता को प्रस्थापित करना।

12. व्यक्तित्व व प्रतिभा सम्पन्न स्थानीय व्यक्तियों के सम्पर्क मे शिक्षार्थी एवं शिक्षको को लाने की व्यवस्था प्रदान करना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ...c

2.9 अध्ययन की परिकल्पना

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के विधिवत अध्ययन पश्चात शिक्षकों में निम्न सदगुण सुनिश्चित होंगे।

1. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भयमुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
3. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं की प्रतिभा (समझ) स्वयं के व्यक्तित्व (जीने) के प्रति विश्वास व स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
4. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास अर्थात् भयमुक्त समाज की स्थापना एवं निरंतरता के लिये अपनी भागीदारी के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
5. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

स्वयं में विश्वास से अर्थ है कि व्यक्ति में यह विश्वास हो कि मैं जानता हूं, मैं जीता हूं और जिसे मैं जानता हूं और जीता हूं उसे मैं दूसरों तक पहुंचा सकता हूं। हर बच्चे में यह चाहना है कि वह पूरे अस्तित्व की व्यवस्था को समझ सके और हर बच्चे में इस योग्यता को प्राप्त करने की क्षमता भी है। अभी पढ़ने लिखने के कार्यक्रम में बच्चे को न तो यह वस्तु उपलब्ध हो पाती है और न ही अपनी क्षमता के प्रति आश्वस्ति। यह देखने में आता है कि पढ़ा लिखा व्यक्ति अपने से कम पढ़े लीखे के सामने शासनपूर्वक प्रस्तुत होता है और अपने से ज्यादा पढ़े लिखे व्यक्ति के

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

सामने हीनतापूर्वक। यह तो सापेक्ष आत्म विश्वास हुआ। आत्म विश्वास निरपेक्ष होता है तो हम अपने में आराम महसूस करते हैं अन्यथा दूसरों से तुलना के आधार पर हमारा सुख चैन घटता–बढ़ता रहता है। यह तो परतंत्रता हुई स्वतंत्रता नहीं। स्वतंत्रता का अनुभव तो स्वयं में विश्वास के आधार पर ही हो सकता है और यह विश्वास समझ के आधार पर ही हो पाता है न कि सिर्फ पढ़ने लिखने के आधार पर। पढ़ना–लिखना शिक्षा का एक भाग है, यह संपूर्ण नहीं है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ तो समझना है।

श्रेष्ठता के प्रति सम्मान– यह दूसरा लक्ष्य है। अर्थात जब मुझे दूसरे में यह दिखाई पड़ता है कि मुझे ऐसा ही होना सहज स्वीकार्य है तो मुझे दूसरे की श्रेष्ठता स्वीकृत होती है। श्रेष्ठता के प्रति सम्मान का भाव स्वयं श्रेष्ठ होने के अर्थ में किये गये प्रयास में निष्ठा के आधार पर ही हो पाता है। निष्ठा के आधार पर ही श्रेष्ठ मानवों के आचरण का सम्यक मूल्यांकन हो पाना संभव है।

प्रतिभा में संतुलन – व्यक्ति में प्रतिभा ज्ञान विवेक और विज्ञान के रूप में हैं। ज्ञान का अर्थ है– जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान। विवेक का अर्थ है – मानव लक्ष्य की पहचान हो जाना अर्थात समाधान, समृद्धि अभय, सह अस्तित्व को समाज में व्यवस्था के रूप में देख पाना। विज्ञान का अर्थ है – मानव लक्ष्य को पूरा करने के कम में कार्यकम की पहचान हो जाना। प्रतिभा में संतुलन से अर्थ है – व्यक्ति में ज्ञान विवेक और विज्ञान इन तीनों आयामों में विकास होना।

व्यक्ति में संतुलन का अर्थ है आहार विहार और व्यवहार इन तीनो आयामों में आचरण की निश्चितता। इन तीनों आयामों में व्यक्ति एक निश्चित आचरण को ही स्वीकारता है। व्यवहार में सामाजिकता से आशय

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

है व्यवहार में उभय सुख का सुनिश्चित होना यानि व्यवहार ऐसा हो जिससे दोनो पक्ष सुखी हो। मानव मानव संबंध में मूल्य की ठीक–ठीक पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन ओर उसके आधार पर उभय सुख को न्याय कहा है। शिक्षित मनुष्य हर संबंध में न्याय कर सके ऐसी अपेक्षा है।

व्यवसाय में स्वावलंबन से आशय है कि व्यक्ति प्रकृति में व्यवस्था को समने के आधार पर श्रम पूर्वक परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन कर सके। स्वावलंबन के लिये प्रयुक्त उत्पादन प्रकिया आवर्तनशील हो यानि कि प्रकिया प्रकृति में निहित चकिय कम के आधार पर हो तथा प्रकिया के पूरा होने के उपरांत परिवार की समृद्धि हो, प्रकृति की भी समृद्धि हो।

किसी शिक्षित व्यक्ति में उपयुक्त छः योग्यताओं का पूरा होना बनता है। इसे पूरा करने के कम में कार्यकम के रूप में लोक शिक्षा योजना, शिक्षा संस्कार योजना परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना दिखाई देती है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

2.10 अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमन

1. इस अध्ययन हेतु छ.ग. राज्य के दो जिले रायपुर और दुर्ग के शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों को लिया गया है।
2. इन विद्यालयों में पढ़ा रहे ऐसे शिक्षकों का चयन किया गया है जिन्होंने मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी (दुर्ग) में या अन्यत्र कहीं क्रमशः 4 माह, 6 माह व 1 वर्ष या उससे अधिक का चेतना विकास मूल्य शिक्षा का विधिवत अध्ययन किया है।
3. इस अध्ययन के लिए कुछ 100 शिक्षकों का चयन किया गया है। सभी शिक्षक हाई स्कूल में अध्यापन का कार्य करते हैं। 50 ऐसे शिक्षक जिन्होंने चेतना विकास मूल्य शिक्षा का मानवीय शिक्षा शोध संस्थान में अध्ययन व प्रशिक्षण प्राप्त किया है एवं 50 शिक्षक इन्हीं विद्यालयों के ऐसे अध्यापक है। जिन्होंने चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन व प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय –3 अध्ययन की प्रक्रिया एवं शोध अभिकल्पना

3.1 भूमिका

3.2 अध्ययन विधि एवं चयन का आधार

3.2.1 सर्वेक्षण विधि

3.2.2 न्यादर्श विधि

3.2.3 प्रदत्त संकलन हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण

3.2.4 उपकरण की व्याख्या एवं मापनी

3.3 तकनीकी अभिप्रयोग

3.4 परीक्षण प्रशासन विधि

3.5 प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय–3

अध्ययन की प्रकिया एवं शोध अभिकल्पना

"अनुसंधान चिंतन की एक ऐसी कमबद्ध तथा विशुद्ध प्रविधि है, जिसमे यंत्रों उपकरणों तथा प्रकियाओं का उपयोग इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि एक समस्या का अधिक समुचित उपलब्ध हो सके।"– सी. सी.फोनफोर्ड

3.1 भूमिका :–

अनुसंधान एक ऐसा सुव्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है जिसके अंतर्गत किसी समस्या के समाधान के लिये विशिष्ट उपकरणों तथा प्रकिया का प्रयोग होता है तथा इसके अंतर्गत संबंधित चरों तथा घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेशण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है।

हर प्राणी अपनी – अपनी समस्या का समाधान करने में सक्षम है। कोई भी समस्या ऐसी नहीं होती है जिसका हल नहीं हो। समस्या को हल करने का प्रयास आदि नियंत्रित और सुव्यवस्थित हो तो वही अनुसंधान का स्वरूप ले लेता है। ज्ञान के कणों को यदि इधर–उधर समेटकर समस्या को हल करने का प्रयास शायद ही सार्थक हो।

जिस प्रकार एक मैकेनिक को एक इंजन या मशीन को ठीक करने के लिये अपने यंत्र बाक्स में से एक उपर्युक्त यंत्र की खोज करनी होती है, ठीक उसी प्रकार अनुसंधान के अंतर्गत समस्या के अध्ययन के लिये अनुसंधानकर्ता को ऐसे वैज्ञानिक उपकरण अथवा प्रकिया का चयन करना होता है, जिसके आधार पर मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

"प्रविधियों के अंतर्गत वे विशिष्ट तरीके सम्मिलित है जिनके द्वारा अनुसंधानकर्ता" – गुड एवं हैड के अनुसार

अपने तथ्यों को उनके तार्किक या सांख्यिकीय विश्लेषण के पूर्व एकत्र तथा कमबद्ध करता है ।"

अनुसंधान में प्रकिया में प्रदत्तों का विश्लेषण उपकरण द्वारा किया जाता है। जिससे समस्या का विश्वनीय समाधान प्राप्त होता है अर्थात वैज्ञानिक उपकरण समस्याओं के समाधान की प्रभावशाली प्रविधि है।

इस लघुशोध के अंतर्गत 'मूल्य' चर है। इस अध्याय से सार्वभौम, प्रतिदर्श, उपकरण के सांख्यिकी, विश्लेषण आदि सम्मिलित है।

3.2 अध्ययन विधि तथा चयन आधार :-

"अध्ययन विधि कम व नियमों का कियात्मक रूप में प्रयोग या अभ्यास करना है।"

"विधि केवल अमूर्त में है। जैसे कि तार्किक चिंतन कि हम विषय एवं विधि को पृथक कर सकते है वास्तव में ये कमिक अवशेष बनाते है। जिसमें विषय विधि को उसी प्रकार निर्धारित करता है जैसे उद्देश्य, साधन एवं अंर्तवस्तु को निर्धारित करता है तथा शुद्ध साहित्य, लेखन शैली एवं व्यवहार को निर्धारित करता है।"– एम.वर्मा

अनुसंधान की प्रकिया में अध्ययन विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। अनुसंधान की विधियों का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है। जे.जे. मुले ने अनुसंधान विधियों को तीन वर्गो में विभाजित किया है।

1. ऐतिहासिक विधि
2. प्रयोगात्मक विधि
3. वर्णात्मक या सर्वेक्षण विधि

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

1. **ऐतिहासिक विधि :–** इस प्रकार के अनुसंधान के अंतर्गत अतीत की घटनाओं, संस्थाओं, संगठनों का अन्वेषण, विवेचन तथा विश्लेषण किया जाता है। इसके अध्ययन के लिए प्रारंभिक तथा मौलिक प्रकरणों व अभिलेखों की सहायता ली जाती है।

2. **प्रयोगात्मक विधि :–** इस प्रकार के अनुसंधान के अंतर्गत चरों के प्रकार्यात्मक संबंधों का अध्ययन वैज्ञानिक मापदण्ड पर नियंत्रित स्थितियों के अन्तर्गत किया जाता है और यथा संभव चरों के पारस्परिक संबंधों में कार्यकरण के संबंध की खोज की जाती है।

3. **सर्वेक्षण अनुसंधान :–** सर्वेक्षण अनुसंधान में प्रायः दो चरों से संबंधित घटनाओं के आकड़ों का संकलन व वर्गीकरण इस उद्देश्य से किया जाता है कि उनके साहचर्यात्मक संबंध को जान सके इसके द्वारा व्यापक जनसंख्या का अध्ययन सरलतापूर्वक किया जा सकता है तथा कम खर्च में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

3.2.1 सर्वेक्षण विधि :–

यह विधि वर्तमान से संबंधित होती है जो अनुसंधान के अंतर्गत घटना व तथ्यों की स्थिति का निर्धारण करती है।

" सर्वेक्षण एक विशेष सामाजिक स्थिति, समस्या अपना समष्टि से संबंधित है उद्देश्य हेतु व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विश्लेषण की एक विधि होती है।" – मोर्स

वर्णात्मक अथवा सर्वेक्षण अनुसंधान शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक व्यवहार में आता है यह एक विस्तृत वर्गीकरण है जिसके अंतर्गत विशिष्ट विधियां तथा प्रकियाएं आती है। उद्देश्य की दृष्टि से लगभग समान होती है अर्थात अध्ययन से संबंधित विषय के स्तर का निर्धारण करना है –

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सर्वेक्षण अनुसंधान की प्रमुख विशेषताएं :–

1. एक ही समय में बहुत सारे लोगों के बारे में आंकड़े प्राप्त हो जाते है।
2. इसमें समस्या स्पष्ट रूप से परिभाषित होती है।
3. यह स्थानीय समस्या के बारे में उपयुक्त सुचना देती है।
4. इसका संबंध किसी व्यक्ति विशेष से ना होकर संपूर्ण जनसंख्या अर्थात न्यायदर्श से होता है।
5. यह वर्तमान नितियों का निर्धारण करता है। तथा वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।
6. गुणात्मक एंव संख्यात्मक दोनो प्रकार का होता है।

सर्वेक्षणों के सामान्य प्रकार :–

1. सामान्य तथा विशिष्ट सर्वेक्षण
2. नियमित तथा यथा वसत सर्वेक्षण
3. अंतिम तथा आकृति पूर्ण सर्वेक्षण
4. संगणना तथा प्रतिदर्शन सर्वेक्षण

"सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अंतर्गत व्यापक तथा कम आकृति वाले जनसंख्याओं का अध्ययन उनमें से चयनित प्रतिदर्शों के आधार पर इस आशय से किया जाता है ताकि व्याप्त समाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटना कमों वितरणों तथा पारस्परिक अन्तः संबंधों का ज्ञान उपलब्ध हो सके । – **करलिंगर**

उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस प्रकार के अनुसंधान का आधार संबंधित जनसमूह का प्रतिदर्श या न्यादर्श होता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

3.2.2 न्यादर्श का चयन प्रकिया :–

शोध में जनसंख्या का तात्पर्य संपूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें से कुछ इकाईयों का चयन करके न्यायदर्श बनाया जाता है। न्यायदर्श की इकाईयों के निरीक्षण तथा मापन से जनसंख्या की विशेषताओं के संबंध में अनुमान लगाया जाता है। एक विशिष्ट समूह की समस्त इकाईयों की जनसंख्या कहते हैं।

सार्वभौम से तात्पर्य उस जगह तथा वहां के समस्त लोगों से है जिनका उपयोग शोध कार्य के लिये किया जाता है। सार्वभौम का वह भाग जहां तक अनुसंधानकर्ता की पहुंच होती है, जनसंख्या कहा जाता है तथा इसी जनसंख्या से प्रतिदर्श का चुनाव किया जाता है।

इस लघुशोध प्रबंध में उच्चतर माध्यमिक शाला के बालकों का ग्रामीण और शहरी वातावरण में मूल्य का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु रायपुर जिले का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों का चयन किया गया है।

"संपूर्ण जनसंख्या का अध्ययन एक कठिन कार्य है इसलिये संपूर्ण समग्र में से कुछ इकाईयों को चुनाव कर उसका अध्ययन किया जाता है जिन्हें न्यायदर्श कहते हैं। "– गुड एवं हैट के अनुसार

संपूर्ण जनसंख्या के अध्ययन में समय व धन अधिक व्यय होता है इसलिये प्रतिदर्श का प्रयोग कर समय व धन की मितव्ययिता तो होती ही है साथ ही निष्कर्ष भी जल्दी प्राप्त हो जाता है। सुविधा समष्टि और प्रतिदर्श के निष्कर्ष में ज्यादा अंतर भी नहीं होता है। समष्टि का स्वरूप सजातीय और विषमजातीय दोनो होता है यदि सजातीय है तो प्रतिचयन प्रकिया का उपयोग करना होता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

पी.वी. यंग के अनुसार – "प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का लघु चित्र होता है।"

प्रतिदर्श के इस उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। एक चांवल पकाते समय केवल इसके लिये पूरे चांवल को छूकर ही इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि चांवल पका या नहीं इसके लिये पूरे चांवल को छू–छूकर देखने की आवश्यकता नहीं होती है।

किसी भी विषय से संबंधित शोध कार्य एवं सांख्यिकीय विधियों के लिये न्यादर्श उसका मूल आधार होता है। इससे प्राप्त निष्कर्ष भी विश्वसनीय होता है।

न्यादर्श का आकार

संस्थान का नाम	कुल संख्या
मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान अछोटी) में अध्ययन किये हुए शिक्षक	50
अध्ययन नहीं किये हुए शिक्षक	50
कुल योग	100

न्यायदर्श चयन की विधि :–

" प्रतिचयन वह कला तथा विज्ञान है जिसकी सहायता से उपयोग में लाए जाने वाले आंकड़ों की विश्वसनीयता पर प्रसंगात्मकता सिद्धांत द्वारा नियत्रण रखा जाता है।" – ड्रेसिंग के अनुसार

समस्या समाधान हेतु शिक्षक का चयन समस्या की आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया गया। समस्या की आवश्यकता और विशिष्ट उद्देश्य के अनुरूप मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अछोटी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन किये हुए 50 शिक्षकों का चयन किया गया एवं इन्हीं शिक्षकों के विद्यालय से 50 ऐसे शिक्षकों का चयन किया गया जिन्होनें चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन नहीं किया है।

इस प्रतिदर्श विधि में लिंग जाति और सामाजिक आर्थिक स्तर पर भिन्नता पर ध्यान केन्द्रित न करते हुए उनकी शैक्षिक योग्यता और चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया गया। न्यादर्श का स्वरूप यादृच्छिक और विषय जातीय है।

यादृच्छिक विधि से चयन करने के लिये समस्त अध्ययन प्राप्त शिक्षकों की सूची तैयार कर ली गई। फिर अध्ययन नहीं किये गये शिक्षकों की सूची तैयार की गई।

3.2.3 प्रदत्त संकलन हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण :–

अनुसंधान प्रक्रम में समस्या समाधान हेतु प्रतिदर्श चयन तथा परिकल्पनाओं के निर्माण के पश्चात उसके परीक्षण के लिये आवश्यक तथा तर्क संगत आंकड़ों के संकलन की आवश्यकता होती है। समस्या के अनुरूप ही परिकल्पना, प्रतिदर्श और संकलन का कार्य किया जाता है और परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप उपकरण का चयन किया जाता है। जिस प्रकार वातावरण का तापमान ज्ञान करने वाला उपकरण, थर्मामीटर की जगह प्रयोग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार प्रत्येक उपकरण अपने विशेष जगह होती है।

प्रत्येक उदाहरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े के लिये उपयुक्त होते है। उद्देश्य पूर्ति के लिये इन उपकरणों में से एक या एक से प्रयोग किया जा सकता है। उपकरण की संख्या प्रतिदर्श पर आधारित होती है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

उपकरण के चयन का आधार :–

1. मौलिक आवश्यकता की पूर्ति के आधार पर।
2. व्यावहारिक आधार पर

मौलिक आवश्यकता की पूर्ति के आधार पर चयन निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए –

1. उपकरण उद्देश्य प्राप्ति में सहायक हो।
2. उपकरण विश्वसनीय तथा वैध होना चाहिए।
3. उपकरण विश्वसनीय हो।
4. उपकरण वस्तुनिष्ठ हो।
5. उपकरण व्यापक व विभेदकारी हो।
6. उपकरण प्रमाणीकृत हो।

इसके अतिरिक्त उपकरण में निम्न व्यवहारिक आधार होना आवश्यक है –

1. अधिक समय साध्य न हो।
2. अधिक खर्चीला न हो।
3. प्रशासन में सरलता हो।
4. अंक देने में सरलता हो।
5. आंकड़ो का विश्लेषण सरल हो।

3.2.4 उपकरणों की व्याख्या एवं मापनी :–

उपरोक्त चयन के आधार को ध्यान में रखकर समस्या के समाधान हेतु "चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जिसमें सभी परिकल्पना से संबंधित 50 प्रश्न है जो स्वनिर्मित है। जिसका उद्देश्य चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का शिक्षकों के व्यक्तित्व में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

3.3 तकनीकी अभिप्रयोग :-

चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रश्नावली में पांच परिकल्पनाओं से संबंधित प्रत्येक परिकल्पना से 10 प्रश्न है। कुल 50 प्रश्न है। सभी प्रश्नों में तीन संभावित उत्तर हैं। जैसे पूर्णतः सहमत, अंशतः सहमत, असहमत एवं हमेशा, कभी–कभी, कभी नहीं।

3.4 परीक्षण प्रशासन की विधि :-

इस अध्ययन हेतु सर्वप्रथम मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) के मुख्य प्रबोधक से अनुमति ली गई एवं वहां चार माह से अध्यनरत शिक्षकों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रश्नावली वितरित किया गया और अपने उद्देश्य से संबंधित सभी जानकारी शिक्षकों को दिया गया एवं उन्हें सहयोग प्रदान करने को कहा गया। और प्रश्नावली के निर्देशों से अवगत कराया गया। इसके पश्चात उन्हें सभी प्रश्नों के उत्तर स्वयं भरने को कहा गया। बाद में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया गया।

इसका प्रयोग सामूहिक या व्यक्तिगत रूप में किया जा सकता है परन्तु सुविधा की दृष्टि से अध्ययन किये हुए एवं अध्ययन नहीं किये हुए शिक्षकों चयनित शिक्षकों को एकत्र कर सामूहिक प्रयोग किया गया। इसकी कोई समय सीमा नहीं है परन्तु 25–30 मिनट की अवधि में यह कार्य संपन्न हो गया। इससे प्राप्त जानकारी विश्वसनीय है। इसके बाद सभी प्रश्नावली को एकत्र कर सभी के उत्तरों में उचित अंक दिया गया। फिर उनका प्रयोग सांख्यिकी में किया गया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

3.5 प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण :–

अनुसंधान प्रकिया में अपरिष्कृत प्राप्तांकों के विश्लेषीकरण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, ही प्राप्तांकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

सांख्यिकी यंत्र की वह शाखा है, जिसमें पूर्व निश्चित उद्देश्यों के अनुसार प्राप्त सर्वप्रथम संकलित प्रदत्तों को प्रमाणीकृत प्रदत्तों में परिवर्तित कर लिया जाता है। इन प्रमाणीकृत प्रदत्तों का प्रयोग परिकल्पनाओं के विश्लेषण तथा सत्यापन हेतु किया गया। इन प्रमाणीकृत आंकड़ों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा प्रमाणिक विचलन की त्रुटि ज्ञात की गई। तत्पश्चात तुलनात्मक अध्ययन के लिये मध्यमान के अंतर सार्थकता 'टी' परीक्षण के माध्यम से ज्ञात की गई।

इस संपूर्ण प्रकिया में निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग किया गया है –

1. संकलित आंकड़ों को प्रमाणीकृत करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया है – मध्यमान

1. $$M \frac{\Sigma X}{X}$$

यहां M= मध्यमान

ΣX = प्राप्तांको का योग

N = प्राप्तांकों का संख्या

2. $$S.D = \frac{\sqrt{\Sigma d2}}{N}$$

S.D = प्रमाप विचलन

Σd^2 = प्राप्तांकों के मध्यमान के विचलन के वर्गों का योग

N = प्राप्तांकों का संख्या

3. $$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD1^2}{N1!} + \frac{SD2^2}{2!}}}$$

t = t मूल्य

www.... darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

M_1 = पहले परीक्षण का मध्यमान

M_2 = दूसरे परीक्षण का मध्यमान

SD_1^2 = पहले परीक्षण के प्रमाप विचलन का वर्ग

4. N_1 = पहले परीक्षण के प्राप्तांकों की संख्या

N_2 = दूसरे परीक्षण के प्राप्तांको की संख्या

इस प्रकार प्राप्त होने वाले 'टी' मूल्य की सार्थकता की जांच 'टी' मान की सारिणी के द्वारा कर ली जाती है। इस प्रकार प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय –4 प्रदत्तों का व्यवस्थापन, विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका

4.2 प्रदत्तों का सारणीयन

4.3 प्रदत्तों का व्यवस्थापन, व्याख्या एवं विवेचना

4.4 परिकल्पनाओं की जांच हेतु सारणी एवं ग्राफ

सारणी 4.1

सारणी 4.2

सारणी 4.3

सारणी 4.4

सारणी 4.5

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय- 4

प्रदत्तों का व्यवस्थापन, विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका :-

समस्त शोध का आधार तथ्यों का संकलन है। तथ्यों के संकलन के बिना शोध अध्ययन का कार्य एक कदम भी नहीं बढ़ सकता। सांख्यिकी अनुसंधान का मूल एवं वैज्ञानिक आधार है। वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार किसी भी निष्कर्ष पर एकाएक नहीं पहुंचा जा सकता है वहां तक पहुंचने के लिये कई स्तरों से गुजरना होता है। सर्वप्रथम विषय का चुनाव करके उससे संबंधित तथ्यों का संकलन कर वैज्ञानिक पद्धति द्वारा निष्कर्ष प्राप्त करते हैं।

निष्कर्ष प्राप्ति अर्थात सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिये t मूल्य का प्रयोग किया गया। जिससे यह ज्ञात किया गया कि प्रतिदर्श के दो वर्गो के मध्यमानों में जो अंतर पाया गया वह केवल संयोगवश है या वास्तविकता पर आधारित समष्टि की तुलना में प्रतिदर्श को छोटा मानते हुए के मान के सार्थकता की जांच के लिये 'स्वतंत्रता के अंश' को देखना अत्यंत आवश्यक है इससे विश्वसनीयता भी व्यक्त होती है। अतः कहा जा सकता है –

" अनुसंधान किसी समस्याओं अच्छे समाधान के लिये कमबद्ध तथा विशुद्ध चिंतन एवं विशिष्ट उपकरणों के प्रयोग की एक विधि है।" – सी. सी. कार्फोड

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ...c

4.2 प्रदत्तों की सारणीयन :-

परीक्षण के द्वारा आंकड़ों को इस प्रकार व्यवस्थित किया गयां कि समस्या से अध्ययन किये हुए (प्रशिक्षित) शिक्षक एवं अध्ययन नहीं किये हुए शिक्षक (अप्रशिक्षित) दोनो समूहों का अलग–अलग मध्यमान प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर प्रामाणिक गणना ज्ञात किया गया इसकी सहायता से एक समूह के दोनों मूल्यों को अलग–अलग किया गया।

4.3 प्रदत्तों की व्यवस्थापन, व्याख्या, विवेचना

परिकल्पना – 1– चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भयमुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

उपरोक्त परिकल्पना में चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन की सार्थकता ज्ञात करने के लिए दो समूह प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित के 50–50 शिक्षकों को लिया गया। इनका टी मूल्य ज्ञात करने के लिए मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया। जो निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट है –

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की तुलना

सारणी कमांक – 4.1

शिक्षक (Teacher)	कुल संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	गणना मूल्य C.R.	सार्थक है / सार्थक नहीं.
अध्ययन किये हुए (प्रशिक्षित)	50	24.76	2.24		
अध्ययन नहीं किये हुए (अप्रशिक्षित)	50	20.1	1.87	11.36	0.01 पर सार्थक है

DF= 98

(Degree of Freedom or DF = N1+N2-2

= 50+50-2

= 98)

ग्राफ

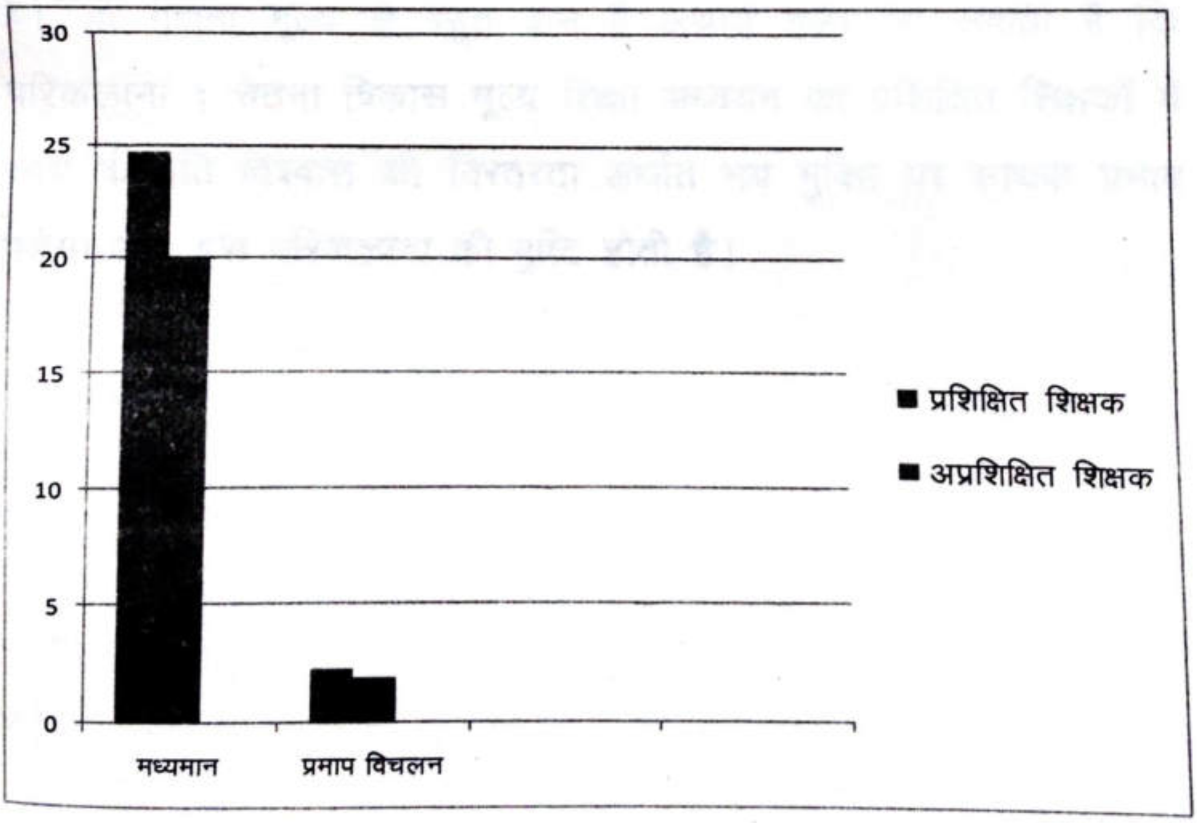

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सारणी कमांक 4.1 से स्पष्ट है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भय मुक्ति के प्राप्तांकों का माध्य कमशः 24.76 व 2.1 तथा दोनो का प्रमाप विचलन कमशः 2.24 व 1.87 है। प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनो शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भय मुक्ति के प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का माध्य अधिक है। अतः चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास का निरंतरता अर्थात भय मुक्ति पर अधिक प्रभाव पड़ा। प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के इस मध्यमान में अंतर की सार्थकता देखने के लिए C.R. (कांतिक अनुपात) की गणना की गई जो 11.36 प्राप्त हुआ। 98df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है। जो गणना मूल्य से बहुत कम है अर्थात कहा जा सकता है कि परिकल्पना 1 **चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भय मुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा अतः इस परिकल्पना की पुष्टि होती है।**

परिकल्पना 2– चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की तुलना

सारणी कमांक – 4.2

शिक्षक (Teacher)	कुल संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	गणना मूल्य C.R.	सार्थक है / सार्थक नहीं
अध्ययन किये हुए (प्रशिक्षित)	50	29.82	1.48	12.68	0.01 पर सार्थक है
अध्ययन नहीं किये हुए (अप्रशिक्षित)	50	25	2.39		

DF= 98

ग्राफ

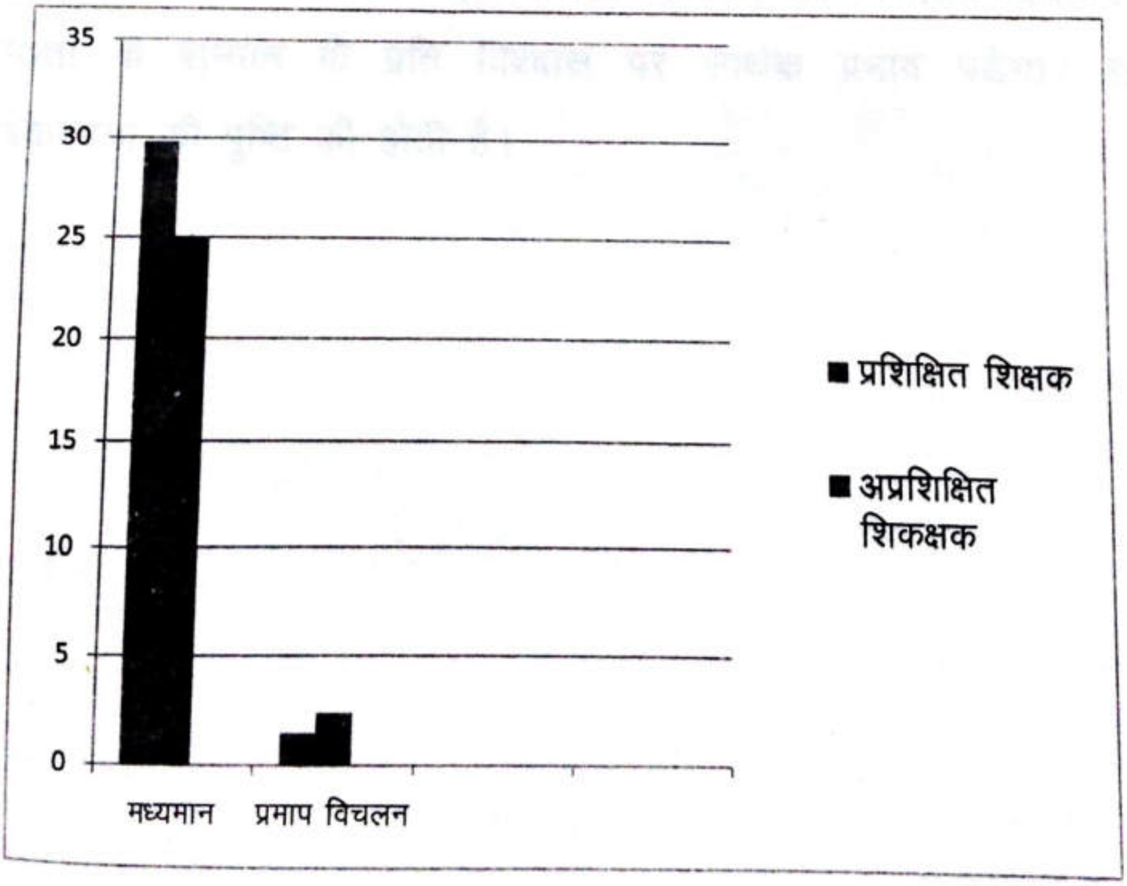

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सारणी कमांक 4.2 से स्पष्ट है कि **चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में श्रेष्ठता के प्रति सम्मान के** प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भय मुक्ति के प्राप्तांकों का माध्य कमशः 29.82 व 25 तथा दोनो का प्रमाप विचलन कमशः 1.48 व 2.39 है। प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनो शिक्षकों में श्रेष्ठता के प्रति सम्मान के प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का माध्य अधिक है। अतः चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति सार्थक प्रभाव पड़ा।

प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के इस मध्यमान में अंतर की सार्थकता देखने के लिए C.R. (कांतिक अनुपात) की गणना की गई जो 12.68 प्राप्त हुआ। 98df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है। जो गणना मूल्य से बहुत कम है अर्थात कहा जा सकता है कि परिकल्पना–2 **चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा। अतः परिकल्पना की पुष्टि की होती है।**

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

परिकल्पना 3– चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं की प्रतिभा (समझ) स्वयं के व्यक्तित्व (जीने) के प्रति विश्वास व स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की तुलना

सारणी कमांक – 4.3

शिक्षक (Teacher)	कुल संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	गणना मूल्य C.R.	सार्थक है / सार्थक नहीं
अध्ययन किये हुए (प्रशिक्षित)	50	28.46	1.19	11.57	0.01 पर सार्थक है
अध्ययन नहीं किये हुए (अप्रशिक्षित)	50	24.42	2.17		

DF= 98

ग्राफ

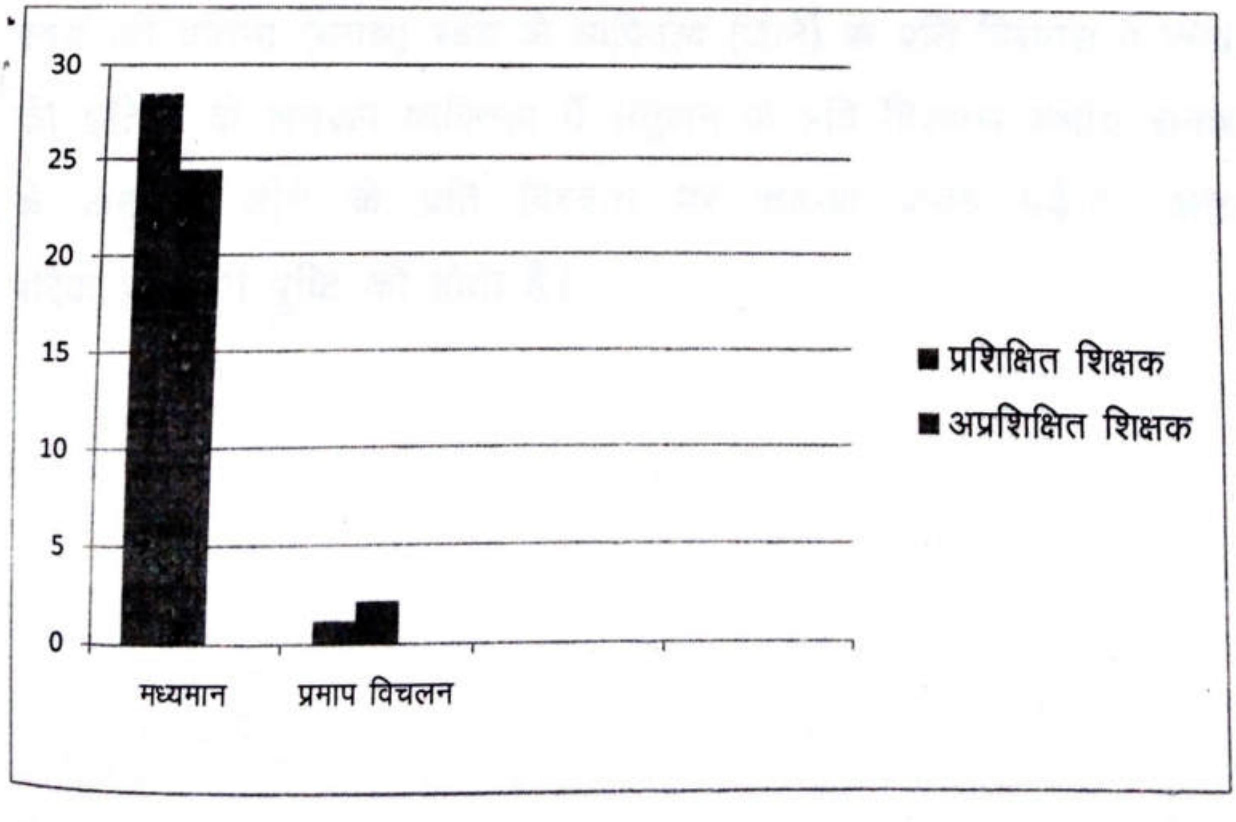

सारणी कमांक 4.3 से स्पष्ट है कि **चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं की प्रतिभा (समझ) स्वयं के व्यक्तित्व (जीने) के प्रति विश्वास व स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास का** प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के प्राप्तांकों का माध्य कमशः 28.46 व 24.42 तथा दोनो का प्रमाप विचलन कमशः 1.19 व 2.17 है। प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनो शिक्षकों में प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का माध्य अधिक है। अतः चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में सार्थक प्रभाव पड़ा।

प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के इस मध्यमान में अंतर की सार्थकता देखने के लिए C.R. (कांतिक अनुपात) की गणना की गई जो 11.57 प्राप्त हुआ। 98df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है। जो गणना मूल्य से बहुत कम है अर्थात कहा जा सकता है कि परिकल्पना–3 **चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं की प्रतिभा (समझ) स्वयं के व्यक्तित्व (जीने) के प्रति विश्वास व स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा। अतः परिकल्पना की पुष्टि की होती है।**

परिकल्पना 4 – चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास अर्थात् भयमुक्त समाज की स्थापना एवं निरंतरता के लिये अपनी भागीदारी के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की तुलना

सारणी कमांक – 4.4

शिक्षक (Teacher)	कुल संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	गणना मूल्य C.R.	सार्थक है / सार्थक नहीं
अध्ययन किये हुए (प्रशिक्षित)	50	27.4	3.1	9.81	0.01 पर सार्थक है
अध्ययन नहीं किये हुए (अप्रशिक्षित)	50	22.1	2.28		

DF= 98

ग्राफ

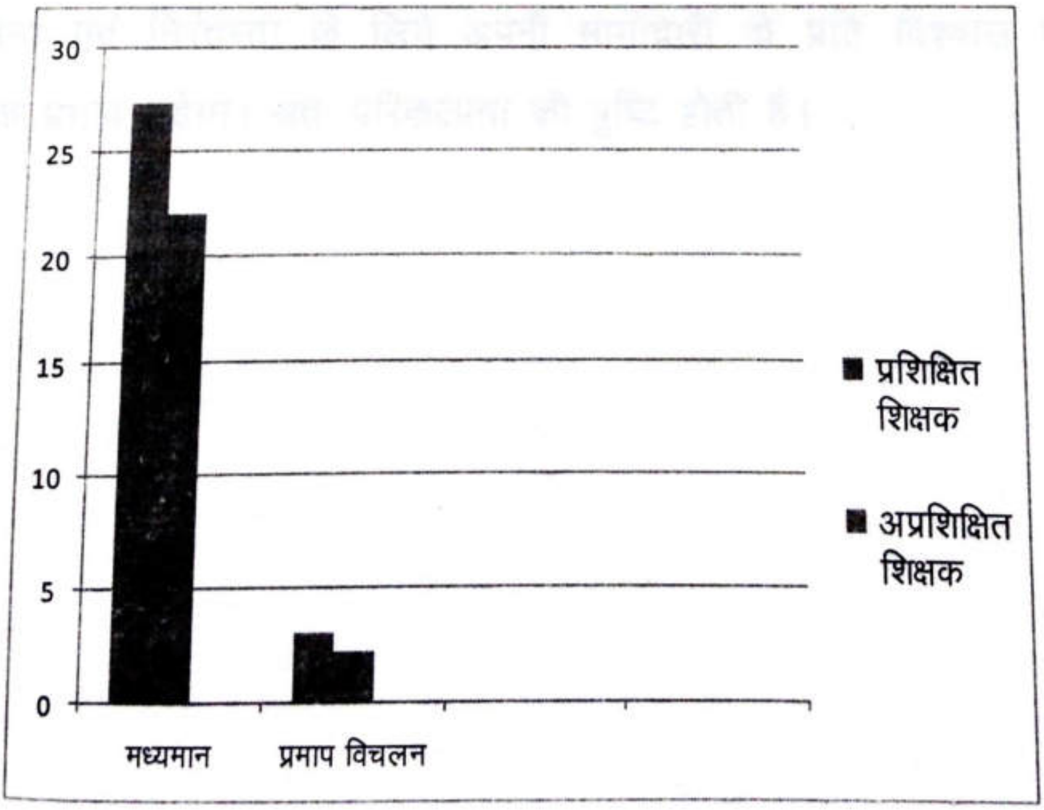

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

सारणी कमांक 4.4 से स्पष्ट है कि **चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास अर्थात् भयमुक्त समाज की स्थापना एवं निरंतरता के लिये अपनी भागीदारी के प्रति विश्वास** का प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के प्राप्तांकों का माध्य कमशः 27.4 व 22.1 तथा दोनो का प्रमाप विचलन कमशः 3.1 व .2.28 है। प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनो शिक्षकों में प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का माध्य अधिक है। अतः चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में सार्थक प्रभाव पड़ा।

प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के इस मध्यमान में अंतर की सार्थकता देखने के लिए C.R. (कांतिक अनुपात) की गणना की गई जो 9.81 प्राप्त हुआ। 98df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है। जो गणना मूल्य से बहुत कम है अर्थात कहा जा सकता है कि परिकल्पना–4 **चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास अर्थात् भयमुक्त समाज की स्थापना एवं निरंतरता के लिये अपनी भागीदारी के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा। अतः परिकल्पना की पुष्टि होती है।**

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

परिकल्पना 5– चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की तुलना

सारणी कमांक – 4.5

शिक्षक (Teacher)	कुल संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	गणना मूल्य C.R.	सार्थक है / सार्थक नहीं
अध्ययन किये हुए (प्रशिक्षित)	50	27.18	2.4	4.34	0.01 पर सार्थक है।
अध्ययन नहीं किये हुए (अप्रशिक्षित)	50	20.36	2.58		

DF= 98

ग्राफ

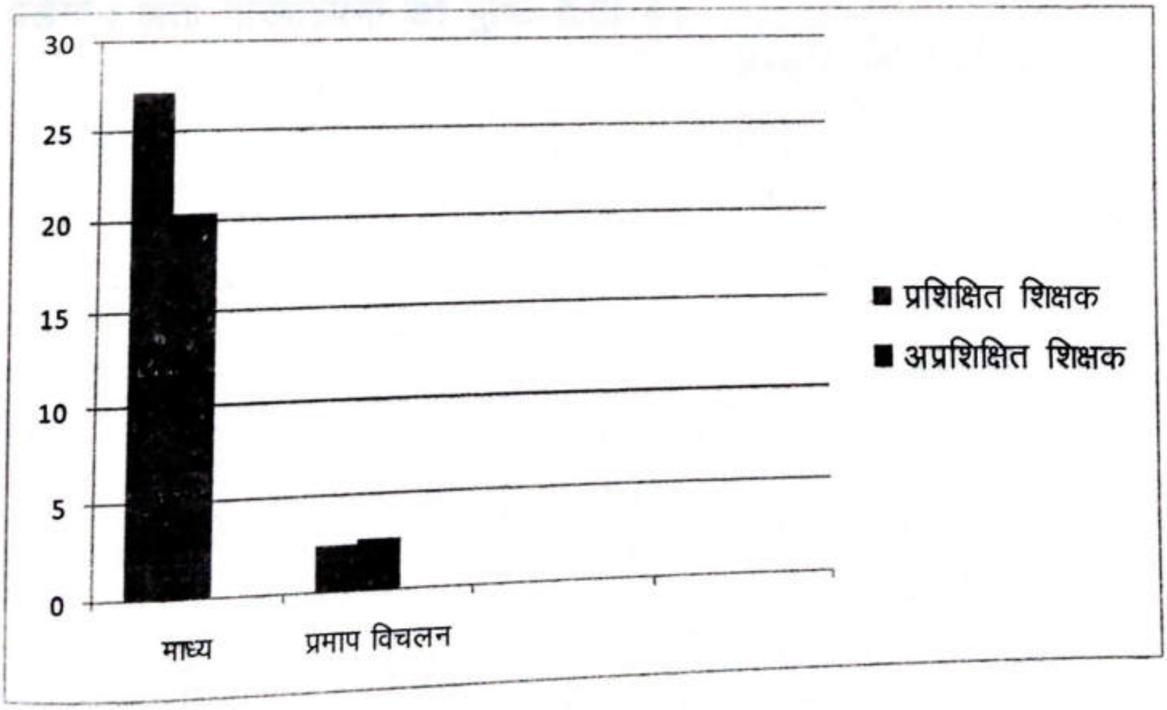

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

सारणी कमांक 4.5 से स्पष्ट है कि **चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास पर** प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के प्राप्तांकों का माध्य कमशः 27.18 व 20.36 तथा दोनो का प्रमाप विचलन कमशः 2.4 व 2.58 है। प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनो शिक्षकों में प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का माध्य अधिक है। अतः चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में सार्थक प्रभाव पड़ा।

प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के इस मध्यमान में अंतर की सार्थकता देखने के लिए C.R. (कांतिक अनुपात) की गणना की गई जो 9.81 प्राप्त हुआ। 98df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है। जो गणना मूल्य से बहुत कम है अर्थात कहा जा सकता है कि परिकल्पना–5 **चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा। अतः परिकल्पना की पुष्टि होती है।**

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय – 5 सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका

5.2 सारांश

5.3 निष्कर्ष

5.4 सुझाव

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय – 5

सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका –

शोध अध्ययन हेतु प्रथम चरण समस्या चयन से लेकर परिकल्पनाओं की पुष्टि तक कार्य विधि के बाद यदि निष्कर्ष का उल्लेख ना करे तो शोध कार्य अधुरा प्रतित होता है। किए गये अनुसंधान कार्य को शोधकर्ता सारगर्भित के माध्यम से जनसाधारण एवं शोधकर्ताओं के लिऐ अन्य संभावित अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करती है।

सरांश के द्वारा शोधकर्ता अध्ययन की समस्या, उद्देश्य, महत्व, परिकल्पना, तथ्य, संकलन, प्रणाली, परिणाम, एवं निष्कर्ष का संक्षेप में सार्थक रूप प्रदान करता है। शोध कार्य के दौरान प्राप्त किए गये अनुभव तथा कमियों को सुझाव के रूप में प्रस्तुत कर परिणामों के परिपालनार्थ एक प्रारंभ दे सकते है।

5.2 सारांश –

प्रस्तुत लघुशोध में शोध का विषय है

"चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का शिक्षकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

उक्त शोध समस्या के सभी विषय सामग्री को 5 अध्यायों में विभक्त किया गया है –

लघुशोध के **प्रथम अध्याय में** सैद्धांतिक पृष्ठ भूमि को स्पष्ट किया गया है। जिसके अंतर्गत प्रस्तावना, अध्यापक शिक्षा में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता तथा शिक्षा आयोग एवं विभिन्न समितियों जैसे कि कोठारी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

आयोग, मुदलियार आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, आदि द्वारा किये गये अनुशंसा एवं सिफारिश को सम्मिलित किया गया एवं वर्तमान पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का अभाव तथा मूल्य शिक्षा के प्रस्तावित रूप का वर्णन किया गया। चेतना विकास मूल्य शिक्षा, अर्थ एवं परिभाषा, चेतना विकास मूल्य शिक्षा का उदभव, मूल्यों के वर्गीकरण के साथ 30 मूल्यों की व्याख्या की गयी। जो इस प्रकार है जीवन मूल्य सुख, शांति, संतोष आनंद। मानव मूल्य, धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा। 9 स्थापित मूल्य–विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, श्रद्धा, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम। शिष्ट मूल्य–सौजन्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता, सौम्यता, सहजता, उदारता, सौहाद्रता, निष्ठा। वस्तु मूल्य–उपयोगिता व कला मूल्य एवं इनके महत्व तथा अध्ययन का समीक्षात्मक आधार, अध्ययन का आवश्यकता को विस्तार से समझाया गया।

द्वितीय अध्याय – संबंधित शोध अध्ययन जिसके अंतर्गत कुमारी हीना चावड़ा, कार्तिक राय चौधरी, बी.रमादेवी, अनिरूद्ध पाण्डेय, आलपोर्ट, वर्तन व लिण्डजे, कैलेंडर एवं हावर्ड एच आदि को भारतीय एवं विदेशी पृष्ठभूमि के अंतर्गत व्याख्या किया गया। समस्या का अर्थ स्पष्ट करते हुए समस्या का चयन तथा समस्या कथन की व्याख्या की गई है। समस्या का कथन है **चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का शिक्षकों के व्यक्तित्व में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन**। प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन है तथा आश्रित चर शिक्षक है। साथ ही समस्या में प्रयुक्त शब्दों का स्पष्टीकरण भी किया गया है। जो इस प्रकार है :–

चेतना : – संज्ञानीयता,ज्ञान, विज्ञान विवेक संपन्नता।

– ज्ञान, साम्यऊर्जा, ईश्वर, परमात्मा शून्य, निरपेक्ष शक्ति।

विकास :– न्यून मूल्य से अधिक मूल्य की ओर परिणाम ही विकास है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

– जीवन पद में संक्रमित होना, गुणात्मक परिवर्तन ही विकास है।

चेतना विकास – जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण ही चेतना विकास है।

मूल्य : – प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता ही मूल्य है।

– जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य उपयोगिता मूल्य व कला मूल्य का प्रमाण परंपरा।

– यर्थाथता का, अर्थ का, भागीदारी का, चिंतन ही मूल्य है।

शिक्षा : – शिष्टता पूर्ण दृष्टि की उदय की प्रक्रिया।

– अस्तित्व में जीवन सहज मूल्य, मानव मूल्य, व्यवसाय मूल्य, स्थापित मूल्य, एवं शिष्ट मूल्य के प्रति निर्भ्रम जानकारी सहित व्यवसाय, व्यवहार चेतना की प्ररिष्कृति ही शिक्षा है।

<u>प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्न है :–</u>

1. मानवीयता पूर्ण जीवन को स्थापित करना।
2. व्यक्ति एवं प्रतिभा में संतुलन उदय हो पाना।
3. समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओ को मानवीय चेतना में परिवर्तन करना।
4. सह–अस्तित्व एवं समाधानपूर्ण सामाजिक चेतना को सर्वसुलभ करना।
5. प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही न्याय का याचक है एवं सदा सही करना चाहता है उसमें न्याय प्रदायी क्षमता तथा सही करने की योग्यता प्रदान करना।
6. प्रत्येक मनुष्य जीवन में अनिवार्यता एवं आवश्यकता के रूप में पाये जाने वाले बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृति की समन्वयता को स्थापित करना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

तथा इसका अन्य उद्देश्य चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन के प्रभाव को अध्ययन किये हुए शिक्षक और अध्ययन नहीं किये हुए शिक्षक के बीच तुलनात्मक अध्ययन कर मापना है। उद्देश्य की प्राप्ति हेतु पांच परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। जो इस प्रकार है:–

1. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भयमुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
3. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं की प्रतिभा (समझ) स्वयं के व्यक्तित्व (जीने) के प्रति विश्वास व स्वयं की प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
4. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास अर्थात् भयमुक्त समाज की स्थापना एवं निरंतरता के लिये अपनी भागीदारी के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
5. चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

परिकल्पनाओं के निर्माण में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद में शिक्षा के उद्देश्य ही स्त्रोत है।

शोध कार्य के अनावश्यक विस्तार व समय की कमी को ध्यान में रखते हुए अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन किया गया है। लघुशोध कार्य के लिए अध्ययन किये हुए एवं अध्ययन नहीं किये हुए रायपुर एवं दुर्ग जिले

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

के शहरी एवं ग्रामीण दोनों से 50–50 शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

तृतीय अध्याय में अध्ययन विधि के रूप में ऐतिहासिक विधि प्रयोगात्मक विधि एवं वर्णात्मक या सर्वेक्षण विधि की व्याख्या की गयी। इस प्रतिदर्श विधि में न्यादर्श चयन के लिए लिंग जाति, सामाजिक, आर्थिक स्तर पर भिन्नता पर ध्यान न केन्द्रित करते हुये उनकी शैक्षणिक योग्यता एवं चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन कर ध्यान केन्द्रित किया गया। न्यादर्श का स्वरूप यादृच्छिक और विषय जाति है। यादृच्छित विधि से चयन करने के लिए समस्त अध्ययन प्राप्त शिक्षकों की सूची तैयार कर ली गयी, फिर अध्ययन नहीं किये गये शिक्षकों की सूची तैयार की गयी। इसके लिए स्वनिर्मित चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। जिसमें तकनीकी अभिप्रयोग के रूप में 50 प्रश्नों को लिया गया। जो परिकल्पना से संबंधित है। इसके पश्चात प्रदत्तों पर सांख्यिकी विश्लेषण किया गया जिसमें प्रमाणित कृत आंकडों का मध्यमान प्रमाणित विचलन तथा प्रमाणित विचलन की त्रुटि याद की गयी तत्पश्चात तुलनात्मक अध्ययन के लिए मध्यमान के अंतर सार्थकता 'टी' परीक्षण के माध्यम से ज्ञात की गयी। जिसके लिए निम्न सूत्रों का प्रयोग किया गया:–

1. $M \frac{\Sigma X}{X}$

2. $S.D = \frac{\sqrt{\Sigma d2}}{N}$

3. $t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD1^2}{N1!} + \frac{SD2^2}{2!}}}$

$t =$ t मूल्य

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

प्रकिया एवं शोध परिकल्पना का विवरण लिया गया है जिसमें अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श का रूप स्पष्ट करते हुए न्यादर्श चयन की विधियों का वर्णन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत प्रदत्तों का व्यवस्थापन विश्लेषण एवं व्याख्या का विवरण दिया गया है। परिकल्पना की जांच हेतु सर्वप्रथम सारणी बनाकर उनका विश्लेषण किया गया है। तथा ग्राफ एवं परिकल्पनाओं की पुष्टि की गई है, जो इस प्रकार है :–

जैसे – चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भयमुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

उपरोक्त परिकल्पना में चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन की सार्थकता ज्ञात करने के लिए दो समूह प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित के 50–50 शिक्षकों को लिया गया। इनका टी मूल्य ज्ञात करने के लिए मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया। जो निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट है –

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की तुलना

सारणी कमांक – 4.1

शिक्षक (Teacher)	कुल संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	गणना मूल्य C.R.	सार्थक है / सार्थक नहीं
अध्ययन किये हुए (प्रशिक्षित)	50	24.76	2.24	11.36	0.01 पर सार्थक है
अध्ययन नहीं किये हुए (अप्रशिक्षित)	50	20.1	1.87		

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

DF= 98

(Degree of Freedom or DF = N1+N2-2
= 50+50-2
= 98)

ग्राफ

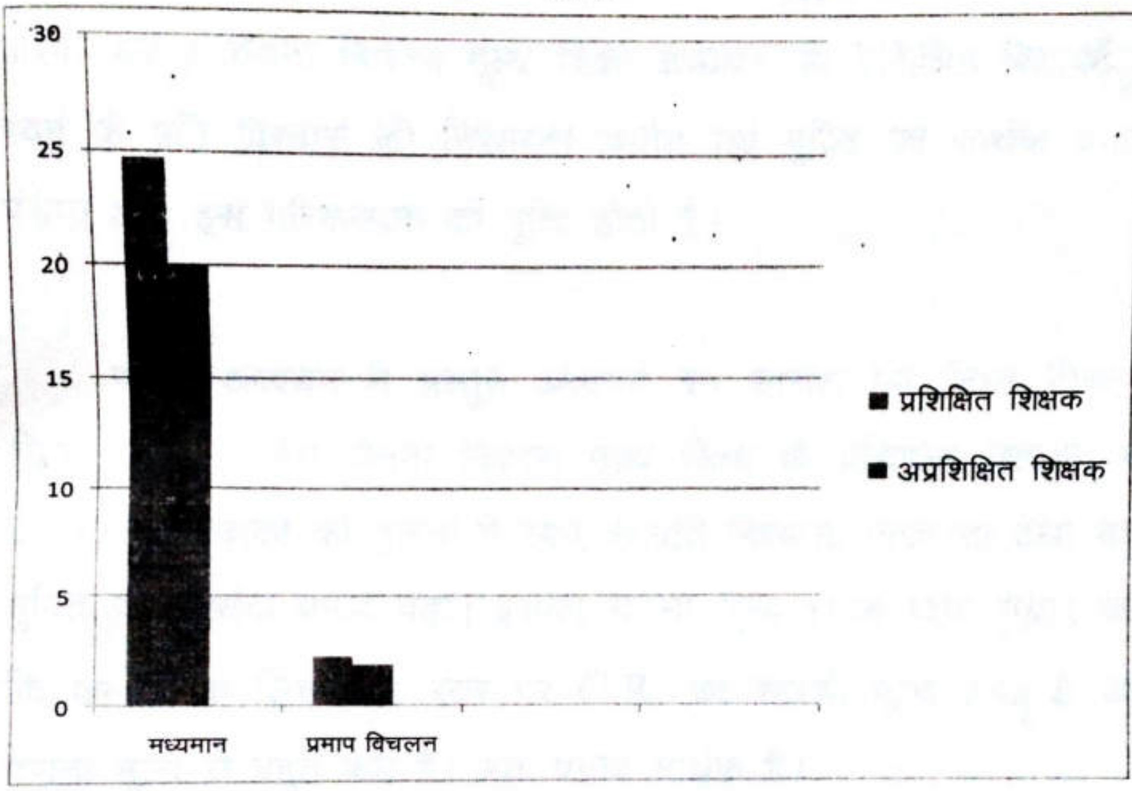

सारणी कमांक 4.1 से स्पष्ट है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भय मुक्ति के प्राप्तांकों का माध्य कमशः 24.76 व 2.1 तथा दोनो का प्रमाप विचलन कमशः 2.24 व 1.87 है। प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनो शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भय मुक्ति के प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का माध्य अधिक है। अतः चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास का निरंतरता अर्थात भय मुक्ति पर अधिक प्रभाव पड़ा।

www.madhyanchal-darshan ... Information Portal

प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के इस मध्यमान में अंतर की सार्थकता देखने के लिए C.R. (क्रांतिक अनुपात) की गणना की गई जो 11.36 प्राप्त हुआ। 98df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है। जो गणना मूल्य से बहुत कम है अर्थात कहा जा सकता है कि परिकल्पना 1 **चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का प्रशिक्षित शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास की निरंतरता अर्थात भय मुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा अतः इस परिकल्पना की पुष्टि होती है।**

पांचवे अध्ययन में प्रस्तुत अध्ययन का सारांश एवं निम्न निष्कर्ष दिया गया :– जैसे चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में स्वयं के प्रति विश्वास, निरंतरता तथा भय मुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ा। इसका गणना मूल्य 11.36 पाया गया। जो कि 98 df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है जो गणना मूल्य से बहुत कम है। अतः प्रभाव सार्थक है।

निष्कर्ष के रूप में लघुशोध से प्राप्त निष्कर्षों व समस्या निवारण सुझाव को बिन्दुवार समझाया गया।

अन्त में लघुशोध के सहायक प्रमुख ग्रंथों की सूची एवं संलग्निका परिशिष्ट में प्रस्तुत की गई है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

5.3 निष्कर्ष :-

परिकल्पनाओं की पुष्टि के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों का सारणी विश्लेषण तथा सांख्यिकी का प्रयोग करके परिकल्पनाओं की पुष्टि की गई है तथा निम्न निष्कर्षों पर पहुंचा गया है।

परिकल्पना – 1 चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में स्वयं के प्रति विश्वास, निरंतरता तथा भय मुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष के अनुसार चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में स्वयं के प्रति विश्वास, निरंतरता तथा भय मुक्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ा। इसका गणना मूल्य 11.36 पाया गया। जो कि 98 df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है जो गणना मूल्य से बहुत कम है। अतः प्रभाव सार्थक है। परिकल्पना की पुष्टि होती है। व परिकल्पना की पुष्टि होती है।

परिकल्पना – 2 चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष के अनुसार चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ा। इसका गणना मूल्य 12.68 पाया गया। जो कि 98 df

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है जो गणना मूल्य से बहुत कम है। अतः प्रभाव सार्थक है। व परिकल्पना की पुष्टि होती है।

परिकल्पना – 3 चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में स्वयं के प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष के अनुसार चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में स्वयं के प्रतिभा के अनुरूप व्यक्तित्व में संतुलन के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ा। इसका गणना मूल्य 11.57 पाया गया। जो कि 98 df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है जो गणना मूल्य से बहुत कम है। अतः प्रभाव सार्थक है। व परिकल्पना की पुष्टि होती है।

परिकल्पना – 4 चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष के अनुसार चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ा। इसका गणना मूल्य 9.81 पाया गया। जो कि 98 df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है जो

www.madhyasthdarshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

गणना मूल्य से बहुत कम है। अतः प्रभाव सार्थक है व परिकल्पना की पुष्टि होती है।

परिकल्पना – 5 चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों के तुलना में उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष के अनुसार चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षित शिक्षकों में अप्रशिक्षित शिक्षकों के तुलना में उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास पर सार्थक प्रभाव पड़ा। इसका गणना मूल्य 4.34 पाया गया। जो कि 98 df के लिए 0.01 स्तर पर C.R. का सारणी मूल्य 2.63 है जो गणना मूल्य से बहुत कम है। अतः प्रभाव सार्थक है व परिकल्पना की पुष्टि होती है।

5.4 सुझाव

1. शिक्षकों को मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद आधारित वांगमय (शास्त्रों) का पठन व अध्ययन करना चाहिए।
2. मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिया जाना चाहिए। ताकि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनो मूल्यों का निर्वाह कर सकें।
3. विद्यालय में चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए ताकि मूल्यों का उचित निर्वाह हो सके।
4. विद्यालय में मानव का मानव से परिवार से समाज से प्रकृति से जो संबंध है। ऐसे संबंध आधारित कार्यक्रम का संचालन करना चाहिए। ताकि संबंधों में जीने की योग्यता बने।
5. चेतना विकास मूल्य शिक्षा परिचय शिविर के माध्यम से सभी शिक्षकों को इस सहीं समझ का प्रस्ताव दिया जाना चाहिए।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

6. शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों व अभिभावकों को भी चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव देना चाहिए।
7. शिक्षकों को मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद आधारित वांगमय पर शोध के लिए आगे आना चाहिए।
8. विद्यालय में सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच मानव लक्ष्य जीवन लक्ष्य एवं शिक्षा के लक्ष्य आदि विषयों पर साप्ताहिक गोष्ठी अवश्य होनी चाहिए। ताकि लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में सब साथ चल सकें।
9. हमारे पूराने विचार व मान्यताओं जिसके वजह से हम सहीं के दिशा में विकास नहीं कर पाते। उसका निरीक्षण, परीक्षण एवं सर्वेक्षण के माध्यम से जांच कर उचित समीक्षा करनी चाहिए।
10. चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रस्ताव को ठीक से जांच कर इसके अध्ययन के लिए उचित वातावरण तैयार करना चाहिए।

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव –

भविष्य में शोध के लिए निम्न विषयों का चयन किया जा सकता है –

1. चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन का छात्र और छात्राओं पर तुलनात्मक अध्ययन ।
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा के आध्यापन से छात्रों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ।
3. ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के बीच उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन के प्रति विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन।
4. ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों में व्यवहार में सामाजिकता के प्रति विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन।
5. सरकारी एवं निजी शिक्षकों में स्वयं के प्रति विश्वास अर्थात भय मुक्ति पर तुलनात्मक अध्ययन ।
6. शिक्षकों के पारिवारिक वातावरण में मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नागराज ए. (1998), मानव व्यवहार दर्शन (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2000), मानव अनुभव दर्शन (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2000), मानव अभ्यास दर्शन (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2001), मानव कर्म दर्शन (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए.(1998), समाधानात्मक भौतिकवाद(जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2001), व्यवहारात्मक जनवाद (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2003), अनुभवात्मक अध्यात्मवाद(जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए.(1998), व्यवहारवादी समाजशास्त्र (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2000), आवर्तनशील अर्थशास्त्र (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2001), मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (1998), परिभाषा संहिता (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (1995), जीवन विद्या– एक परिचय (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2000), मानवीय संविधन का प्रारूप (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (1999), जीवन विद्या अध्ययन बिन्दु (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)
नागराज ए. (2011), संवाद (जीवन विद्या प्रकाशन–अमरकंटक)

(सभी दर्शन,वाद एवं शास्त्र जीवन विद्या प्रकाशन भजनाश्रम अमरकंटक से प्रकाशित है।)

2. शर्मा आर.के. (2008)– उदीयमान भारतीय समाज में अध्यापक प्रकाशन मंदिर आगरा
3. पाठक पी.डी.एवं – त्यागी जी.एस.(1971) शिक्षा के समान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
4. शर्मा आर.के. (2008)– शिक्षा के समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिकीय आधार दुबे कृष्ण शर्मा हरिशंकर
5. कुलश्रेष्ठ एस.पी. (1974) –इमर्जिंग वेल्यू पेटर्न ऑफ टीचर्स इन सोशियोकल्चरल इनवारामेंट ऑफ द स्कूल इन द प्रेसेंट एस'

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_

शब्दावली

अनुसंधान	Research
विचार	Ideas
प्रस्तावना	Introduction
समस्या	Problem
उद्देश्य	Aim
विदेश में	Abroad
परिकल्पना	Hypothesis
परिसीमा	Delimitation
विधि	Method
सर्वेक्षण	Survey
न्यादर्श	Sampling
असंभाव्य	Non Probability
उपकरण	Tools
प्रश्नावली	Questionnaire
प्रतिचयन	Sampling
विश्लेषण	Analysis
संबंधित अध्ययन	Related study
प्रदत्त	Data
प्रक्रिया	Process
प्रविधि	Technique
संग्रह	Collection

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

क्षेत्र	Area
स्वीकृत	Accept
निष्कर्ष	Conclusion
औसत	Average
प्रतिशत	Percent
अवलोकन	Observation
आवश्यकता	Need
आंकड़े	Data
प्रशासन	Administration
महत्व	Importance
व्याख्या	Interpretation
लघुशोध प्रबंध	Dissertation
सुझाव	Suggestion
आधार	Base
संग्रह	Collection
सारांश	Summary
संदर्भित ग्रंथ	Bibliography
प्राक्कथन	Preface

www.vidyasthi-darshan.info - Information Portal

परिशिष्ट

मूल्यांकन हेतु प्रश्नावली

(शोधार्थी–अवधेश पटेल)

नाम – ....उम्र...................

पद – ....

विद्यालय/संस्था – ....

का नाम एवं पता ....

आपका स्थायी निवास– ....

....

....

शैक्षणिक योग्यता – ....

ई.मेल एवं दूरभाष नं. – ....

रूचि – ....

क्या आपने मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) का मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) में या अन्यत्र कहीं विधिवत अध्ययन किया है। हाँ ☐ नहीं ☐

(अ) ☐ चार माह (ब) ☐ छह माह (स) ☐ एक वर्षीय (द) ☐ एक वर्ष से अधिक

निर्देश :–

"अगले पृष्ठ पर कुछ कथन दिये हुए हैं। प्रत्येक को ध्यान से पढ़िए। यदि वह कथन आप पर हमेशा लागू होता है या आप उस कथन से सहमत है तो हमेशा/पूर्णतः सहमत के आगे बाक्स पर (√) चिन्ह लगायें, यदि कभी–कभी/अंशतः सहमत एवं कभी नहीं/पूर्णतः सहमत यह आप पर लागू होता है तो इसके सामने बाक्स पर (√) का चिन्ह लगायें। केवल एक उत्तर के सामने ही आपको सही (√) का चिन्ह लगाना है। यद्यपि उत्तर देने का कोई समय सीमा निश्चित नहीं हैं, फिर भी अतिशीघ्र सभी कथनों का उत्तर देने का कष्ट करें।

-I

विद्यार्थियों से गलती होने पर मैं उन्हें डांटता हूँ व जरूरत पड़ने पर दण्ड भी देता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

स्वयं गलती होने पर मैं पछताता और दुःखी होता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

मैं दूसरों के कारण दुखी होता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

भविष्य की चिन्ता के कारण मैं दुःखी रहता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

परिवार में कलह का कारण वस्तु–वाहन या पैसे की कमी ही है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

विद्यार्थियों से गलती होने पर मैं उन्हें स्नेहपूर्वक समझाता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

स्वयं से गलती होने पर मैं स्वनिरीक्षण पूर्वक गलती का कारण तलाशता हूँ, व ठीक करता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

मेरे सभी दुखों का कारण मैं स्वयं हूँ।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

मैं संबंधियों को सुखी करना चाहता हूँ व ऐसा कर पाता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

परिवार में संबंध को न समझ पाने के कारण मैं दुखी होता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

भाग–II

सुविधापूर्ण आधुनिक जीवन शैली ही मेरे सम्मान का आधार है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

अच्छी गाड़ी, बड़े घर, और ब्रांडेड कपड़े से ही हमें सम्मान मिलता है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

ऊंचे पद में आसीन व्यक्ति के सामने जाते ही मैं स्वतः हीन या द्वेष भावना से ग्रसित हो जाता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

मेरे अनुसार रूप, धन, पद और बल से सुसज्जित व्यक्ति ही श्रेष्ठ है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

मेरे अनुसार पैसा ही सब कुछ है और सुविधा ही जीवन शैली है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

6 श्रेष्ठ व्यक्ति की पहचान उसका आचरण व समझदारी है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

7 श्रेष्ठ व्यक्ति को पहचानकर मैं उसके जैसा होने की इच्छापूर्वक प्रयास करता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

8 मेरे अनुसार सभी व्यक्ति श्रेष्ठ बन सकते हैं।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

9 मैं श्रेष्ठता का अनुसरण, अनुकरण व आज्ञापालनपूर्वक अभ्यास करता हूँ।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

10 दूसरे व्यक्ति को समझ पाना पूर्णतः संभव है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

भाग–III

1. मांसाहार मानव शरीर के लिए अनुकूल है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

2. मैं तेज मिर्च मसालेदार, स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

3. जब खालीपान से परेशान होता हूँ तो शापिंग मॉल में अन्यत्र कहीं घूमने से तरोताजा महसूस करता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

4. वर्तमान शिक्षा से सही–गलत का सार्वभौम ज्ञान अर्थात विवेक की पूर्ण जागृति संभव है।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

5. वर्तमान शिक्षा हर व्यक्ति को आवर्तनशील विधि के उत्पादन की कुशलता प्रदान करती हैं।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

6. मूल स्त्रोत को बनाये रखते हुए उत्पादन करने की योग्यता व उसका मूल्यांकन की योग्यता विकसित व शिक्षा की आवश्यकता है।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

7. नासमझी के कारण विज्ञान के कई अविष्कार धरती को प्रदूषण युक्त और ग्लोबल वार्मिंग की तरफ ले रही है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

8. आहार, विहार, व्यवहार से व्यक्तित्व का मूल्यांकन होता है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

9. मेरा आहार, विहार, व्यवहार संतुलित है, अतः मैं कह सकता हूँ। मेरा व्यक्तित्व संतुलित व अच्छा है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

10. मानव के गैर जिम्मेदारी व अनिश्चित आचरण से ही धरती बीमार हो रही है –

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

वेतन कम होने के कारण पढ़ाने के प्रति रूचि कम होती है।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

वर्तमान शिक्षा के माध्यम से हम में व छात्रों में परिवार, समाज, देश व प्रकृति के साथ अपनेपन का जिम्मेदारी का भाव पैदा होता है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

वर्तमान शिक्षा के माध्यम से मैं विद्यार्थियों को अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था व "वसुधैव कुटुंबकम" की शिक्षा दे पाता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

अपने संबंधियों से अच्छा संबंध रखने के लिए उनके गलतियों को नजरअंदाज करना आवश्यक है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

"भय बिनु होय न प्रीत" यह सामाजिक व्यवस्था के लिये आवश्यक है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

मैं सामाजिक नियम, स्वमन, स्वनारी, दयापूर्ण कार्य व्यवहार का पूर्णतः पालन करता हूँ।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

वर्तमान में हम समाज में नहीं समुदाय चेतना में जीते हैं।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

मेरे अनुसार धन व्यक्तिगत नहीं होकर समाज की संपत्ति है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

परस्पर संबंध जैसे माता–पिता, भाई–बहन, मित्र–मित्र, पति–पत्नि, गुरू–शिष्य, साथी सहयोगी आदि संबंध को समझकर ही संबोधित किया जाना उचित है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

). संबंधियों से अच्छा संबंध रखने के लिए उनकी गलतियों को समझकर स्नेहपूर्वक सही करने की आवश्यकता है।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

भाग–V

पैसे कमाकर सुख सुविधा इकट्ठा करना ही जीवन का लक्ष्य है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अच्छी नौकरी या व्यवसाय ही है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

वर्तमान शिक्षा से श्रम के प्रति सम्मान बढ़ता है।

(अ) ☐ हमेशा (ब) ☐ कभी–कभी (स) ☐ कभी नहीं

आवश्यकताएँ असीम है, साधन सीमित है, अतः हर व्यक्ति की सभी आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Awadhesh Patel PhD - Raipur Univ_c

5 प्रचलित वर्तमान शिक्षा से मुझमें उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावंलबन के प्रति विश्वास बढ़ा है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

6 वर्तमान शिक्षा से हर विद्यार्थी अच्छी नौकरी या व्यवसाय के योग्य नहीं बन पाता है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

7 शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी या व्यवसाय नहीं होकर उत्पादन में स्वावलंबन के प्रति विश्वास बढ़ना है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

8 वर्तमान शिक्षा से श्रेय के प्रति सम्मान घटा (कम हुआ) है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

9 वर्तमान में विज्ञान के सभी अविष्कारों से मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति संभव है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

10 आवश्यकताएँ सुनिश्चित है प्रकृति में साधन पर्याप्त है, अतः हर व्यक्ति की सभी आवश्यकताएँ समृद्धि के स पूरा हो सकता है।

(अ) ☐ पूर्णतः सहमत (ब) ☐ अंशतः सहमत (स) ☐ असहमत

निम्न प्रश्नों पर संक्षिप्त विचारधारा लिखें।

1. मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? यह कैसे पूरा होगा।

2. वर्तमान शिक्षा की प्रमुख कमी कौन–कौन सी है? यह कैसे दूर होगा।

हस्ताक्षर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal